गद्य-खण्ड

हिन्दी गद्य के विकास का संक्षिप्त परिचय

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. "छन्द और लय से रहित, विचार प्रधान तथा व्याकरण सम्मत वाक्यों में निबद्ध रचना को 'गद्य' कहते हैं।
2. गद्य विचार- विनिमय का महत्वपूर्ण साधन है अर्थात् गद्य वह मार्ग है जिसके द्वारा लेखक पाठक को विभिन्न पात्रों, सेटिंग्स, संघर्ष के बिन्दुओं और कथानिक रेखाओं के साथ कहानी के माध्यम से ले जाता है, जो अन्तिम समाधान में समाप्त होती है।
3. भारतेन्दु युग के दो प्रमुख लेखकों के नाम हैं—बालकृष्ण भट्ट और प्रतापनारायण मिश्र।
4. भारतेन्दु युग के दो नाटककार हैं—श्रीनिवास दास और बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमधन'।
5. प्रेमचन्द के दो उपन्यासों के नाम हैं—सेवासदन, गबन।
6. रामचन्द्र शुक्ल 'शुक्ल युग' के लेखक हैं।
7. हिन्दी गद्य का जनक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को कहा जाता है।
8. द्विवेदी युग के दो लेखकों के नाम हैं—आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी और माधव प्रसाद मिश्र।
9. भारतेन्दु युग की दो पत्रिकाओं के नाम हैं—कविवचन सुधा और हिन्दी प्रदीप।
10. नागरी प्रचारिणी सभा की नींव श्यामसुन्दर दास द्वारा रखी गई थी।
11. सरदार पूर्ण सिंह 'द्विवेदी युग' के निबन्धकार थे।
12. बालकृष्ण भट्ट 'भारतेन्दु युग' के लेखक थे।
13. शुक्ल युग की समय-सीमा सन् 1919 ई. से 1938 ई. तक।
14. 'चन्द्रकान्ता' उपन्यास के लेखक का नाम देवकी नन्दन खत्री है।
15. प्रेमचन्द जी ने दीन-हीन किसान-मजदूरों, नारी-उद्धार, समाज सुधार, राष्ट्रीय चेतना, अनमेलविवाह, लगान, छूआछूत, आदि विषयों पर उपन्यास लिखे थे।
16. निबन्ध गद्य की ऐसी विधा है जिसमें निबन्धकार अपने भाव या विचार को सुसंगठित, व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध तरीके से प्रस्तुत करता है।
17. हिन्दी के दो प्रसिद्ध कहानीकार हैं- प्रेमचन्द और जयशंकर प्रसाद
18. नाटक एक अभिनय परक एवं दृश्य काव्य विद्या है, जिसमें सम्पूर्ण मानव जीवन का रोचक एवं कुतूहलपूर्ण वर्णन होता है। अर्थात् नाटक 'नट' शब्द से निर्मित है जिसका आशय-सात्विक भावों का अभिनय।
19. 'गोदान' मुंशी प्रेमचन्द की रचना है।
20. हिन्दी के दो प्रमुख एकांकीकार हैं—'जगदीशचन्द्र माथुर और 'रामकुमार वर्मा'।
21. हिन्दी के चार संस्मरणों के नाम हैं - (1) वे दिन वे लोग, (2) पुरानी स्मृतियाँ, (3) स्मृति की रेखाएँ, (4) मिट्टी के पुतले।
22. बालकृष्ण भट्ट ने 'हिन्दी प्रदीप' पत्रिका का सम्पादन किया।
23. द्विवेदी युग की तीन रचनाओं के नाम - चन्द्रकान्ता, उर्वशी, सुदामा।
24. हिन्दी के दो प्रमुख रेखाचित्रों का सृजन करने वाले लेखकों के नाम श्रीमती महादेवी वर्मा और रामवृक्ष बेनीपुरी।
25. हिन्दी की प्रमुख जीवनी लिखने वाले लेखकों के नाम हैं - अमृत राय, मदन गोपाल, रामविलास शर्मा, विष्णु प्रभाकर।
26. हिन्दी उपन्यास का सम्राट 'मुंशी प्रेमचन्द्र' को कहा जाता है।
27. 'कवि-वचन-सुधा' नामक पत्रिका का सम्पादन भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने किया था।
28. 'आलोचना' शब्द का शाब्दिक अर्थ है, "किसी वस्तु, तथ्य आदि की परख पूर्ण रूप से करना अर्थात् उसके गुण-दोष को पहचानना, फिर उस विषय-वस्तु की आलोचना करना।
29. हिन्दी कहानी के विकास में 'मुंशी प्रेमचन्द्र' का विशेष योगदान रहा।

❖❖

1

बात

–प्रतापनारायण मिश्र

(जीवन काल–वर्ष 1856–1894 ई.)

रेखांकित अंशों की व्याख्या तथा तथ्यपरक प्रश्न छात्र स्वयं करें।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. प्र० सं० 17 पर
2. प्र० सं० 17-18 पर
3. प्र० सं० 18 पर
4. पं० प्रताप नारायण मिश्र 'भारतेन्दु युग' के लेखक हैं, आगे का उत्तर प्र० सं० 17 पर है।
5. प्र० सं० 17 पर है।
6. पं० प्रताप नारायण मिश्र ने काव्य, नाटक, प्रहसन, रुपक, निबन्ध तथा उपन्यास विद्या में रचनाएँ लिखी, इनकी दो रचनाएँ हैं – पंचामृत और राधारानी।
7. पाठ 'बात' निबन्ध विद्या की रचना है तथा इस पाठ का मुख्य उद्देश्य है–
   1. बात के अनेक काम देखने में मिलते हैं।
   2. बात के द्वारा कोई भी भाव सहजता एवं सरलता से विदित हो सकता है।
   3. लाखों कोस का समाचार मुख या लेखनी से निर्गत बात बतला सकती है।
   4. हम डाकघर अथवा तारघर के सहारे दूर की बात जान सकते हैं।
   5. सभी काम बात पर ही निर्भर करते हैं।
8. प्र० सं० 17-18 पर है।
9. बात पाठ से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें सोच-समझ कर बातें करनी चाहिए क्योंकि बात से ही मनुष्य के सभी कार्य सम्पादित होते हैं, बात ही मनुष्य के जीवन को कुछ का कुछ बना देती है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. प्रताप नारायण मिश्र जी की शैली की दो विशेषताएँ हैं–
   (i) उनकी लेखन शैली संयत एवं गम्भीर है।
   (ii) लेखन में विनोदपूर्ण व्यंग्य तथा वक्रता के दर्शन होते हैं।
2. मिश्र जी भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को अपना गुरु मानते थे।
3. प्रताप नारायण मिश्र की तीन रचनाओं के नाम - पंचामृत, राधारानी तथा वचनावली।
4. मिश्रजी ने निबन्ध नाटक, कविता, प्रहसन, उपन्यास विद्या में रचनाएँ लिखी हैं।
5. प्रताप नारायण 'मिश्र' 'भारतेन्दु युग' के लेखक हैं।
6. बालकों की बातें सुन्दर, प्यारी-प्यारी होती हैं। वह अपनी तोतली जुबान में बाते करते हैं।
7. मिश्रजी ने 'ब्राह्मण' एवं 'हिन्दुस्तान' पत्रिकाओं का सम्पादन किया।
8. प्रताप नारायण मिश्र जी के समय के दो लेखकों के नाम हैं - बालकृष्ण भट्ट तथा लाला श्री निवास दास।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'कलामुल्लाह' शब्द का अर्थ अल्लाह का कलाम या अल्लाह का कथन है।
2. सुहाती बात से लेखक का अभिप्राय है मन को अच्छी लगने वाली बात।
3. वैद्य स्वभावानुसार एवं कार्य के अनुरूप किसी रोग जैसे पित्त और उससे सम्बन्धित विषयों पर बात बताते हैं।
4. हम अपने हृदय के भावों की अभिव्यक्ति बात के माध्यम से करते हैं।
5. प्रताप नारायण मिश्र को हिन्दी, उर्दू, बाँग्ला, अंग्रेजी तथा फारसी भाषा का ज्ञान था।
6. मिश्रजी ने ईश्वरचन्द्र विद्यासागर से बाँग्ला भाषा में वार्तालाप किया था।

व्याकरण एवं रचना बोध

(प्र० 23 पर)

1. बात – कथन, वाणी, वचन।
   शुक – तोता, सुग्गा, सुआ।
   ईश्वर – परमात्मा, प्रभु, विधाता।

2. **सन्धि विच्छेद**

धर्मावलम्बी – धर्म + अवलम्बी

परमेश्वर – परम + ईश्वर

योगाभ्यास – योग + अभ्यास

मुहावरा

1. **अर्थ** – बात का महत्त्व न होना

वाक्य प्रयोग– राम ने दिनेश को इतना अधिक प्रलोभन दिया फिर भी उसकी बात जाती रही।

2. **अर्थ** – बहुत पुरानी बात दोहराना

वाक्य प्रयोग– राम तो हमेशा पुरानी बात को उखाड़ता रहता है।

3. **अर्थ** – दृढ़ निश्चय करना, किसी कथन या मामले को बुद्धि में बैठना

वाक्य प्रयोग– हरीश अपनी बात जमाना जानता है।

सुपथ – सु-पथ (सुन्दर रास्ता) तत्पुरुष समाज

कापुरुष – कायर पुरुष - कर्मधारय

कुमार्गी – (गलत रास्ता) - कु + मार्गी कर्मधारय।

❖❖

2

स्मृति

—श्रीराम शर्मा

(जीवन काल—वर्ष 1892–1967 ई.)

1. रेखांखित वाले प्रश्न के उत्तर छात्र स्वयं करें।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. प्र० सं० 24-25 पर देखिए।
2. प्र० सं० 24-25 पर देखिए।
3. प्र० सं० 24 पर देखिए।
4. प्र० सं० 27-28 पर देखिए।
5. प्र० सं० 24-25 पर देखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. प्र० सं० 25 पर देखिए।
2. श्रीराम शर्मा शुक्ल एवं शुक्लोत्तर युग के लेखक हैं।
3. लेखक ने कुँए में उतरने का दृढ़ निश्चय कर लिया कि चिट्ठियाँ निकालनी हैं तो साँप से लड़कर मृत्यु या बचकर दूसरा जन्म इसकी चिन्ता न थी। इसी दृढ़ विश्वास के बल पर उसने कुँए में उतरने का निश्चय किया।
4. स्मृति पाठ से हमें यह शिक्षा मिलती है कि संकट के समय धैर्य से काम लेना चाहिए। यदि हम किसी मुसीबत में फँस जाए तो बुद्धिमानी से उस मुसीबत का सामना करना चाहिए।
5. प्र० सं० 26 पर देखिए।
6. प्र० सं० 25 पर देखिए।
7. प्र० सं० 25 पर देखिए।
8. प्र० सं० 25 पर देखिए।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. श्रीराम शर्मा का जन्म किरथरा (मक्खनपुर) गाँव में हुआ था।
2. यह 'शिकार' नामक पुस्तक से लिया गया है।
3. लेखक ने 'प्रताप' पत्रिका में सह-सम्पादक के रुप में कार्य किया है।
4. बोलती प्रतिमा में लेखक का नाम श्रीराम शर्मा है।
5. लेखक ने साँप को चक्षुः श्रवा पर्यायवाची शब्द से सम्बोधित किया है।
6. लेखक ने इस घटना को अपनी माँ को सुनाया।
7. लेखक ने सन् 1915 में मैट्रीक्युलेशन की परीक्षा उत्तीर्ण की थी।
8. लेखक ने डण्डे की तुलना गरुड़ से की थी।

व्याकरण एवं रचना बोध

उत्तर-चक्षु + श्रवा, प्रसन्न + वदन, भयं + कर अर्थात् भयभीत करने वाला।

2. मुहावरा

अर्थ — आमने-सामने होना।

वाक्य प्रयोग— मोहन की उसकी पत्नी से रोज आँखे चार होती हैं।

अर्थ — बुरी दशा होना

वाक्य प्रयोग— आजकल शिक्षा पद्धति बेहाल हो रही है।

अर्थ — भारी विपत्ति होना।

वाक्य प्रयोग— युद्ध में हमारी सेना दुश्मनों की टोली पर टूट पड़ी।

3. सत्याग्रह — सत्य + आग्रह

गुणाकार — गुण + आकार

एकाक्षरी — एक + अक्षरी

4. स्वयं, ग्राह्य, हठ।

❖❖

3

ठेले पर हिमालय

–डॉ. धर्मवीर भारती

(जीवन काल–वर्ष 1926–1997 ई.)

रेखांखित अंशों के प्रश्न स्वयं छात्र करें।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. प्र० सं० 31 पर देखिए।
2. प्र0 सं० 31 पर देखिए।
3. प्र0 सं0 31 पर देखिए।
4. 'गुनाहों का देवता' उपन्यास साहित्यिक विद्या की रचना है, इसके रचनाकार धर्मवीर भारती हैं।
5. प्र० सं० 32 पर देखिए।
6. प्र० सं0 31 पर देखिए।
7. प्र0 सं0 31 पर देखिए।
8. प्र0 सं० 31 पर देखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. प्र0 सं० 34 पर देखिए।
2. बस से उतरने के बाद लेखक के स्तब्ध होने का कारण सामने की घाटी में सौन्दर्य का अदभुत नजारा था। उसे देखकर लेखक को लगा कि वह दूसरे लोक में आ गया है।
3. लेखक ने हिमालय के सौन्दर्य की तुलना ठेले पर बर्फ की सिल्लियों से की है।
4. हिमालय दर्शन के उपरान्त लेखक को प्रतीत हुआ कि उसकी खिन्नता, निराशा, थकावट सब छूमन्तर हो गया है।
5. प्र० सं0 33 पर देखिए।
6. प्र० सं0 32 पर देखिए।
7. रानीखेत से मसकाली का रास्ता भयानक मोड़ों वाला था।
8. 'सेन' की बातों को सुनकर लोग इसलिए हँसने लगें क्योंकि वह बादलों मे ढके हिमालय को देखकर प्रसन्नता से चिल्लाकर कहा बर्फ देखो फिर अकस्मात वह फिर लुप्त हो गया।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. चाँद नदी प्यासी थी।
2. कौसानी की पर्वतमाता में कत्यूर घाटी है।
3. धर्मवीर भारती आधुनिक युग के लेखक हैं।
4. वैजनाथ के समीप गोमती नदी स्थित है।
5. धर्मवीर भारती ने 'धर्मयुग' साप्ताहिक पत्रिका का सम्पादन किया था।

व्याकरण एवं रचना बोध

शीर्षासन – शीर्ष द्वारा आसन तृतीय तत्पुरुष समास
हिमालय – हिम का आलय - षष्ठी तत्पुरुष समास
जलराशि – जल की राशि - षष्ठी तत्पुरुष समास

2. रवि + इन्द्र, तद् + काल, सोम + ईश्वर
3. आवा, हार, आई
4. शीतल + ता
   कष्ट + प्रद
   सुहावना + पन
5. सम्, सु, सह,
   पाठ्येत्तर, सक्रियता
   छात्र स्वयं करें।

❖❖

4

मंत्र

–प्रेमचन्द

(जीवन काल–वर्ष 1880–1936 ई.)

रेखांकित अंशों के प्रश्न छात्र स्वयं करें।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. प्र० सं० 37-38 पर देखिए।
2. प्र0 सं0 38 पर देखिए।
3. प्र० सं0 38 पर देखिए।
4. प्र० सं० 38 पर देखिए।
5. प्र0 सं० 37-38 पर देखिए।
6. प्र० सं० 37-38 पर देखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'मन्त्र' कहानी से हमें सीख मिलती है कि अगर हम किसी की मदद कर सकते हैं तो हमें जरुर करनी चाहिए क्योंकि वक्त बरलते देर नहीं लगती और हो सकता है कि हमें भी आगे ऐसे ही किसी के मदद की जरुरत पड़े।
2. डॉ० चड्ढा का स्वभाव असंवेदनशील, अभिमानी स्वार्थी था।
3. नारायणी ने भगत के लिए यह सोचा कि वह उसे बड़ी रकम देगी।
4. भगत ने कैलाश को इसलिए बचाया था, क्योंकि उसके मन में बदले की भावना नहीं थी। जीवन में उसने कोई गलत कार्य नहीं किया था, बस उसके मन में दूसरे के प्रति दया थी।
5. डॉ० चड्ढा को जीवन-पर्यन्त यह बात याद रहेगी कि जिसने उसके बेटे को बचाया, उसके बेटे को मैं अभिमान के कारण बचा न सका।
6. प्र0 सं० 43 पर देखिए।
7. भगत का कलेजा धक्-धक् इसलिए करने लगा था कहीं उसे कैलाश को बचाने में देर तो नहीं हो गई।
8. क्योंकि भगत ने कैलाश की जान बचाई।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. प्रेमचन्द्र के बचपन का नाम धनपतराय श्रीवास्तव था।
2. प्रेमचन्द्र का जन्म सन् 1880 ई. में वाराणसी जिले के लमही ग्राम में हुआ था।
3. पिता और पुत्र का सम्बन्ध था।
4. मृणालनी, कैलाश की सहपाठी थी।
5. डॉ० चड्ढा को गोल्फ का खेल पसन्द था।
6. (क) (×)

   (ख) (✓)

   (ग) (×)

   (घ) (×)

व्याकरण एवं रचना बोध

1. प्र, अव, उप
2. निरोग, शत्रु, क्षमा, आशा
3. **अर्थ** – दर्शन लाभ से आँखों को सुख मिलना।

   वाक्य प्रयोग– बरसों के बाद विदेश से मुझे लौटा देख माँ की आँख ठंडी हो गईं।

3. **अर्थ** – मन में शान्ति हो जाना

   वाक्य प्रयोग– जबसे सुरेश ने अपनी कक्षा में प्रथम आने वाले विद्यार्थियों से ज्यादा अंक पाए हैं, तब से उसके कलेजे में ठंडक पड़ गई है।

   अर्थ – पछताना

   वाक्य प्रयोग– यदि सन्तान अच्छी न निकले तो माता-पिता किस्मत ठोकते रहते हैं।

4. आत्मरक्षा – आत्मा की रक्षा - तत्पुरुष समास

   महाशय – महान् है आशय जिसका - बहुब्रीहि समास

   सावन-भादों – सावन और भादों - द्वन्द्व समास

5. मन्त्र कहानी में उर्दू के तीन शब्द - सेहरा, हुक्काम, हुजूर।

❖❖

5

गुरुनानक देव

–आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी

(जीवन काल–वर्ष 1907–1979 ई.)

रेखांकित प्रश्न छात्र स्वयं करें।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. प्र० सं० 48-49 पर देखिए।
2. प्र० सं0 48-49 पर देखिए।
3. प्र० सं० 49 पर देखिए।
4. प्र0 सं0 48-49 पर देखिए।
5. 'द्विवेदी' जी शुक्लोत्तर युग के लेखक हैं तथा उनकी तीन कृतियाँ हैं- पुनर्नवा, बाणभट्ट की आत्मकथा, अशोक के फूल।
6. प्र० सं0 48-49 पर देखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. प्र० सं0 49 पर देखिए।
2. प्र0 सं0 50 पर देखिए।
3. हजारी प्रसाद द्विवेदी शुक्ल युग के निबन्धकार हैं।
4. प्र0 सं0 49 पर देखिए।
5. पद्म-भूषण सम्मान से सम्मानित किया गया था।
6. लोकोत्तर शब्द का अर्थ असाधारण, विलक्षण।
7. प्र० सं० 50 पर देखिए।
8. 'गुरुनानक देव' सिक्ख धर्म के प्रवर्तक थे।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'गुरुनानक देव' पाठ के रचयिता आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी हैं।
2. अहंकारों में क्या रखा है। यह मुक्ति का नहीं, ये बन्धन के लिए है। इसलिए अहंकारों का त्याग कर अपने लक्ष्यों को प्राप्त करो।
3. गुरुनानक का जन्म कार्तिक पूर्णिमा को मानते हैं।
4. गुरुनानक देव के उपदेश जीवन में रोशनी भरने वाले थे।
5. लखनऊ विश्वविद्यालय से आपने आचार्य की उपाधि प्राप्त की थी।
6. 'आलोक पर्व' रचना के लिए।
7. आज का मनुष्य बाह्य आडम्बरों को धर्म समझता है।
8. सन्धान का अर्थ खोज तथा मुषूर्षु का अर्थ - मृत्यु के निकट।

व्याकरण एवं रचना बोध

1. अन, वि, सम्।
2. स्वर्ण कमल – सोने का फूल – तत्पुरुष समास
   अर्थहीन – अर्थ से हीन – तत्पुरुष समास
   महापुरुष – महा+पुरुष – द्वन्द्व समास
3. लोक – लोक+उत्तर गुणसन्धि
   सर्व + अधिक – दीर्घसन्धि
   अमृत + उपम – गुणसन्धि
4. अनुग्रह – कृपा, उपकार
   उद्भाषित – चमकना
   उद्वेलित – जो उत्तेजना से भरा हुआ है।
5. अलख – लस्व, दृश्य
   जर्जर – दृढ़
   आघात – उपचार

❖❖

6

गिल्लू

—महादेवी वर्मा

(जीवन काल—वर्ष 1907–1987 ई.)

रेखांकित अंशों के प्रश्न छात्र स्वयं करें।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. महादेवी वर्मा का जन्म फरुखाबाद में हुआ था।
2. गिल्लू (गिलहरी) का वर्णन हैं।
3. दुर्घटना में आहत होकर लेखिका (महादेवी वर्मा) अस्पताल पहुँची।
4. पितरपक्ष में कौआ पक्षी अवतीर्ण होता है।
5. गिल्लू 'रेखाचित्र' विधा की कृति है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. प्र० सं० 58 पर देखिए।
2. महादेवी वर्मा का गिल्लू के साथ आत्मीयता का व्यवहार था।
3. गिल्लू नामक पाठ से हमें शिक्षा मिलती है कि हमें भी जीव-जन्तु पर दया करनी चाहिए।
4. प्र० सं0 56 पर देखिए।
5. 'आधुनिक युग की मीरा' महादेवी वर्मा को कहा जाता है।
6. गिलहरियों की जीवन अवधि दो वर्ष की होती है।
7. गिल्लू को खाने में काजू देती थी।
8. प्र० सं० 55-56 पर देखिए।
9. महादेवी वर्मा छायावाद युग की लेखिका हैं।
10. लेखका ने लघु प्राणी शब्द गिल्लू (गिलहरी) के लिए प्रयोग किया है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. प्र० सं० 55-56 पर देखिए।
2. प्र० सं0 55-56 पर देखिए।
3. प्र० सं० 55-56 पर देखिए।
4. महादेवी वर्मा –'छायावादी' काव्यधारा की कवियित्री थीं।
5. प्र० सं० 55-56 पर देखिए।
6. प्र० सं० 56 पर देखिए।

व्याकरण एवं रचना बोध

1.	सम + आदरित	—	दीर्घ सन्धि
	दुः + घटना	—	विसर्ग सन्धि
2.	अनायास	—	अचानक, अपने आप, बिना प्रयत्न के
	हरीतिमा	—	हरियाली।
3.	उष्णता	—	तरावट
	स्निग्ध	—	अस्निग्ध
	आकर्षित	—	विकर्षित
4.	(क) अपवाद	—	अप (उपसर्ग)
	अनादर	—	अन् (उपसर्ग)
	(ख) स्वर्ण + इम (प्रत्यय)		
	दूर + स्थ (प्रत्यय)		

❖❖

7 निष्ठामूर्ति कस्तूरबा

—काका कालेलकर

(जीवन काल—वर्ष 1885–1981 ई.)

रेखांकित अंशों के प्रश्न छात्र स्वयं करें।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. प्र० सं० 61-62 पर देखिए।
2. प्र० सं० 61-62 पर देखिए।
3. प्र० सं० 61-62 पर देखिए।
4. प्र० सं० 61-62 पर देखिए।
5. प्र० सं० 61-62 पर देखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. प्र० सं० 61 पर देखिए।
2. प्र० सं० 61-62 पर देखिए।
3. प्र० सं० 61-62 पर देखिए।
4. प्र० सं० 64 पर देखिए।
5. कस्तूरबा का बच्चों के साथ माँ के समान व्यवहार रहा था। बच्चे उन्हें 'बा' कहते थे।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. काका कालेलकर की दो रचनाओं के नाम - बाबू की झाँकियाँ, हिमालय प्रवास।
2. गाँधीजी और कस्तूरबा के बीच आपसी समर्पण और भरोसे का व्यवहार था।
3. पाठ 'निष्ठावान कस्तूरबा' की भाषा हमको सरल व सुबोध लगी।
4. कालेलकर जी ने बी०ए० तक शिक्षा प्राप्त की थी।
5. कालेलकर जी का जन्म महाराष्ट्र के सतारा जनपद में हुआ।
6. काका कालेलकर को संस्कृत, हिन्दी, गुजरात तथा बंगला भाषा का ज्ञान था।

व्याकरण एवं रचना बोध

1. एक + अक्षरी — दीर्घ सन्धि
   गुण + आकार — दीर्घ सन्धि
   सत्य + आग्रह — दीर्घ सन्धि
2. धर्म में निष्ठ — तत्पुरुष समास
   राष्ट्र की माता — तत्पुरुष समास
   प्राण के लिए घातक — तत्पुरुष समास
3. (1) अधिकारी, (2) बीच, मध्य, (3) प्राप्ति, लब्धि
4. परतन्त्र, साधारण, नियम अनिष्ठ
5. मति — अक्ल, बुद्धि, प्रज्ञा, जेहन
   निधि — खजाना, कोष, सम्पत्ति, धन, पूँजी
   निष्ठा — विश्वास, श्रद्धा, यकीन

❖❖

8

तोता

—रबीन्द्रनाथ टैगोर

(जीवन काल—वर्ष 1861–1941 ई.)

रेखांकित अंशों के प्रश्न छात्र स्वयं करें।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. प्र० सं० 67-68 पर देखिए।
2. प्र० सं० 67-68 पर देखिए।
3. प्र० सं० 67-68 पर देखिए।
4. प्र० सं० 67-68 पर देखिए।
5. प्र० सं० 67 पर देखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. रबीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म 7मई, 1861 ई. में कलकत्ता (कोलकाता) के ठाकुरवाड़ी नामक स्थान पर हुआ था।
2. रबीन्द्रनाथ टैगोर की आरम्भिक शिक्षा प्रतिष्ठित सेन्ट जेवियर स्कूल में हुई थी।
3. भानजे ने ''राजा'' से कहा अगर सच बात जानना चाहते हो, तो सुनारो, पण्डितो, नकलनवीसों, मरम्मत करने वालों और मरम्मत की देखभाल करने वालों को बुलाइए। निन्दकों को हलवे-माँडो में हिस्सा नहीं मिलता, इसलिए वे ऐसी अच्छी बात करते हैं।
4. तोते को खाना नहीं मिला, खाने की जगह पोथिया खिलाई गईं इसलिए तोता मर गया।
5. भारत में गाये जाने वाले राष्ट्रीय गान जन, गण, मन तथा बाँग्ला देश में गाये जाने वाला आमार शोनार बाँग्ला है।
6. निन्दक ने अफवाह फैलाई कि तोता मर गया।
7. तोते की दिशा व उसको खाने न देना तथा पोथियों से ढक देना, दिखाना चाहते थे।
8. पढ़ाने का ढंग देखकर राजा ने समुझ लिया कि यहाँ बन्दोबस्त में कहीं कोई भूलचूक नहीं है।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. प्र0 सं0 67 पर देखिए।
2. सर्वप्रथम भारत में विश्व का सर्वोच्च पुरस्कार रवीन्द्रनाथ टैगोर को मिला
3. प्र0 सं0 67 पर देखिए।
4. प्र0 सं0 68 पर देखिए।
5. प्र0 सं0 67 पर देखिए।
6. प्र0 सं0 67 पर देखिए।
7. विश्व भारती के संस्थापक रवीन्द्रनाथ टैगोर जी थे।
8. रवीन्द्रनाथ टैगोर की विश्व प्रसिद्ध रचना 'जन-गण-मन' तथा 'आमार शोनार बाँग्ला है।

व्याकरण एवं रचना बोध

घोड़े पर सवार — तत्पुरुष समास
राज का पण्डित — तत्पुरुष समास
देश और विदेश — द्वन्द्व समास

2. किवदंती, मिथ्या समाचार
अज्ञानता, मूर्खता, नासमझी
अपने या सामने या सुधार आदि की जगह।
3. रंक, हानि, बदनसीब
4. कनक, स्वर्ण, कंचन, सुवर्ण
पेड़, तरु, पादप, विटप, अगम
नृप, भूप, नृपति, सम्राट, नरेश
5. **अर्थ** — नीचतापूर्ण बात करना
वाक्य प्रयोग— हरीश हमेशा ओछी बात करता है।
अर्थ — बहुत ज्यादा डर जाना
वाक्य प्रयोग— बैल को अपने समीप आता देख सोहन डर से अधमरा हो गया।
अर्थ — कम होना
वाक्य प्रयोग— राम की शादी में टोटा पड़ गया।
6. नाम + निशान — व्यंजन सन्धि
बे + अदबी — व्यंजन सन्धि
देश + विदेश — व्यंजन सन्धि
पाठ्येत्तर सक्रियता — छात्र स्वयं करें।

❖❖

9 सड़क-सुरक्षा एवं यातायात के नियम

तथ्यपरक प्रश्न

1. हादसों से बचने के लिए सड़क-सुरक्षा एवं यातायात के नियमों की जानकारी आवश्यक है।
2. प्र0 सं० 74 पर देखिए।
3. प्र0 सं० 74 पर देखिए।
4. प्र0 सं० 74 पर देखिए।
5. प्र0 सं० 74 पर देखिए।
6. प्र0 सं० 74 पर देखिए।
7. यातायात के लिखित संकेतों को शब्दों, अंकों तथा वाक्यों में प्रयोग करके आवश्यक बातें बताई जाती हैं जबकि चित्र-संकेतों में चित्रों के माध्यम से आवश्यक बातें बताई जाती हैं। आगे का उत्तर प्र० सं० 75 पर देखिए।
8. प्र0 सं० 75 पर देखिए।
9. प्र0 सं० 75 पर देखिए।
10. प्र0 सं० 75 पर देखिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. प्र0 सं० 74 पर देखिए।
2. प्र0 सं० 75 पर देखिए।
3. प्र0 नं 1 तथ्यपरक का उत्तर देखिए।
4. प्र0 सं० 75 पर देखिए।
5. प्र0 सं० 75 पर देखिए।
6. प्र0 सं० 75 पर देखिए।
7. प्र0 सं० 74 पर देखिए।
8. प्र0 सं० 74-75 की सहायता से छात्र स्वयं करें।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. यातायात के नियमों का पालन न करने से सड़क दुर्घटनाएँ होती है।
2. सड़क सुरक्षा का अर्थ है – सड़क पर चलने वाले प्रत्येक व्यक्ति की सुरक्षा।
3. प्र0 सं० 75 पर देखिए।
4. प्र0 सं० 75 पर देखिए।
5. प्र0 सं० 75 पर देखिए।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. यातायात दो शब्दों से मिलकर बना है 'यात + आयात', जिसका अर्थ है आना-जाना।
2. सड़क यातायात के नियम विवेकपूर्ण होते हैं।
3. भारत में वर्ष 2011 की अवधि में लगभग 4.9 लाख दुर्घटनाएँ हुईं।
4. लाल बत्ती का संकेत है कि वाहन को रुकना है।
5. हरी बत्ती का संकेत है कि अब आगे बढ़ना या चलना है।
6. पीली बत्ती को संकेत है कि चलने के तैयार होना।
7. विश्वभर में कुल वाहनों में से एक प्रतिशत वाहन भारत में हैं।
8. पैदल, साइकिल एवं रिक्शा चालकों को हमेशा अपनी लेन में अर्थात् बांयी तरफ रहना चाहिए।

❖❖

काव्य-खण्ड

हिन्दी पद्य के विकास का संक्षिप्त परिचय

पद्य साहित्य के इतिहास पर आधारित प्रश्न

1. प्र० सं० 77 पर देखिए।
2. आचार्य भामह के अनुसार महाकाव्य की परिभाषा "महाकाव्य सर्गबद्ध होता है। वह महानता का महान प्रकाशक होता है। उसमें निर्दोष शब्दार्थ, अलंकार और सद्धास्तु होना चाहिए। उसमे विचार-विमर्श, दूत, प्रयाण, युद्ध, नायक का अभ्युदय, यह पाँच सन्धियाँ हों।"
3. प्र० सं० 78 पर देखिए।
4. प्र० सं० 78 पर देखिए।
5. प्र० सं० 78-79 पर देखिए।
6. प्र० सं० 79 पर देखिए।
7. आदिकाल में वीरों और योद्धाओं में वीर रस का संचार ही काव्य का मुख्य उद्देश्य रह गया था। अत: वीर रस से पूर्ण गाथाओं का वर्णन किया था, इसलिए इस काल को वीरगाथा काल कहा जाता है। इस काल के प्रसिद्ध कवियों के नाम हैं - चन्दबरदाई, दलपति विजय, जगनिक, नरपति नाल्ह।
8. भक्तिकाल की दो धाराएँ हैं - निर्गुण और सगुण। निर्गुण भक्ति की दो शाखाएँ हैं - ज्ञानमार्गी और प्रेममार्गी। सगुण भक्ति की दो शाखाएँ हैं - कृष्णभक्ति और रामभक्ति शाखा। इस काल के कवियों की रचनाओं के नाम हैं - सूरदास - सूरसागर

   तुलसीदास - रामचरितमानस

   कबीरदास - बीजक

   मलिक मोहम्मद जायसी - पद्‌मावत

   मंझन - मधुमालती

   कुटुबन - मृगावती

   उस्मान - चित्रावली।
9. 'रामचरितमानस' की रचना करते समय तुलसीदास का उद्देश्य मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के लोक संग्रही चरित्र को काव्य का विषय बनाकर भारतीय समाज और हिन्दी साहित्य को दृढ़ बनाना रहा होगा।
10. प्र० सं 80 पर देखिए।
11. ज्ञानाश्रयी शाखा के कवियों व रचनाओं के नाम

    कबीरदास - बीजक

    रैदास या रविदास - रैदास की बानी

    गुरुनानक देव - जपुजी साहिब

    संत दादू दयाल - हरदे वाणी

    संत मलूक दास - ज्ञान बोध
12. प्र० सं0 80 पर देखिए।
13. प्र० सं0 79 पर देखिए।
14. प्र० सं0 79 पर देखिए।
15. हिन्दी साहित्य के आदिकाल को डॉ० रामकुमार वर्मा ने चारणकाल की संज्ञा से अभिहित किया है। इस काल का परिवेश विभिन्न मत-मतान्तरों के अन्तर्गत तथा युद्ध के भीषण परिवेश से पर्यवेक्षित रहा। जिसमें स्वतन्त्र चेतना का निरन्तर **ह्रास** हुआ। कविगण युद्ध के समय राजा का अतियोक्तिपूर्ण ढंग से गुणगान करते थे।

❖❖

1

साखी

—कबीरदास

(जीवन काल—वर्ष 1398–1518 ई.)

रेखांकित अंशों के प्रश्न छात्र स्वयं करें।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. प्र0 सं० 82-83 पर देखिए।
2. प्र0 सं० 82-83 पर देखिए।
3. प्र0 सं० 82-83 पर देखिए।
4. प्र0 सं० 82-83 पर देखिए।
5. प्र0 सं० 83 पर दोहा -10 देखिए।
6. कबीरदास का मत है कि यह संसार सेमल के फूल के समान सुन्दर तो लगता है, किन्तु उसी के समान गन्धहीन और क्षण भंगुर भी है। उसमें वास्तविक सुख प्राप्त नहीं हो सकता है। अर्थात् संसार भी मनुष्य को बड़ा सुखद और सुन्दर प्रतीत होता है। परन्तु सांसारिक भोगों का परिणाम अंततः एक धोखा सिद्ध होता है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. कबीर ने गुरु को ईश्वर से श्रेष्ठ कहा है, क्योंकि गुरु के ज्ञान के बिना ईश्वर की प्राप्ति सम्भव नहीं हो सकती।
2. कबीर के अनुसार ईश्वर की प्राप्ति मन्दिर या मस्जिद में जाकर नहीं अपितु सच्चे मन से उनकी भक्ति से होती है। यदि मनुष्य के अन्दर से अंहकार समाप्त हो जाए तो उसे स्वतः ईश्वर की प्राप्ति हो जाती है।
3. मनुष्य को अपनी सुन्दरता पर घमण्ड इसलिए नहीं करना चाहिए क्योंकि सुन्दरता तो क्षण-भंगुर होती है अर्थात् शरीर के साथ उसकी सुन्दरता समाप्त हो जाती है।
4. कबीरदास के अनुसार हम मोक्ष की प्राप्ति मोह लोभ और भ्रम को त्यागकर मन की दृढ़ता और और सच्चे गुरु के उपदेशों पर मनन करके प्राप्त कर सकते हैं।
5. कबीरदास के अनुसार तन गुरु के ज्ञान तथा ईश्वर की साधना के बिना नष्ट हो जाता है।
6. गहरे अंधकार में जब दीपक जलाया जाता है तो अंधेरा मिट जाता है और उजाला फैल जाता है। कबीरदास जी कहते हैं उसी प्रकार दुखों को दूर करने के लिए ज्ञान रुपी दीपक जब हृदय में जलता है तो अज्ञान रुपी अन्धकार मिट जाता है मन के विकार अर्थात् संशय, भ्रम आदि नष्ट हो जाते हैं।
7. कबीरदास जी ने सांसारिक वस्तुओं को क्षण भंगुर बताया है।
8. कबीर ने भक्ति न करने वालों में विषय में कहा है कि जिस व्यक्ति में भक्ति का अभाव वह 'भव-जल' में डूबता है —
   "भगति बिना मौजलि डूबत हे रे।"

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. कबीरदास ने अपना गुरु रामानन्द को माना है।
2. कबीरदास ने सधुक्कड़ी एवं पंचमेल खिचड़ी भाषा का प्रयोग किया है। इसमें राजस्थानी हरयाणवी, पंजाबी, खड़ी बोली, अवधी, ब्रज भाषा के शब्दो की बहुलता है।
3. कबीर ने मनुष्य की तुलना सोने के घड़े से की है।
4. कबीरदास के बच्चों के नाम कमाल और कमाली थे।
5. कबीरदास की रचनाओं के नाम साखी, सबद, रमैनी।
6. कबीरदास निर्गुण काव्यधारा की ज्ञान मार्गी शाखा के प्रमुख कवि थे।
7. कबीरदास लगभग 120 वर्ष तक जीवित रहे।
8. विद्वानों ने कबीर की भाषा को सधुक्कड़ी एवं पंचमेल खिचड़ी बताया है।

व्याकरण एवं रचना बोध

1. दु:ख, भक्ति, जिह्वा।
2. रुपक अलंकार
3. पतंग — नाव, नैया, तरी।
   गुरु — आचार्य, शिक्षक, विद्वान्।
   मुख — मुँह, चेहरा, सूरत, शक्ल।
4. अन्याय, अशान्त, पक्का।

❖❖

2 पदावली

–मीराबाई

(जीवन काल–वर्ष 1498–1546 ई.)

रेखांकित अंशों के प्रश्न छात्र स्वयं करें।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. प्र० सं० 87 पर देखिए।
2. प्र० सं० 87-88 पर देखिए।
3. प्र० सं० 87-88 पर देखिए।
4. कृष्ण की भक्ति में डूबी मीरा कृष्ण को ही अपना पति मानती है और कहती है कि उनके तो केवल गिरिधर गोपाल ही है, दूसरा कोई नहीं है। माता-पिता, भाई-बन्धु आदि इस संसार में कोई भी कृष्ण के सिवा उनका अपना नहीं है। उन्होंने कृष्ण भक्ति में सबको त्याग दिया है।
5. इस पद में कृष्ण की दीवानी मीराबाई कहती है कि मुझे राम रूपी बड़े धन की प्राप्ति हुई है। मेरे सद्गुरु ने मुझ पर कृपा करके ऐसी अमूल्य वस्तु भेंट की है, उसे मैने पूरे मन से अपना लिया है। उसे पाकर मुझे लगा मुझे ऐसी वस्तु प्राप्त हो गई है, जिसका जन्म-जन्मान्तर से इन्तजार था।
6. प्र० सं० 87 पर देखिए। आगे का प्रश्न का उत्तर है लोगों के द्वारा मीरा को बावरी कहा जाता है। इसके पीछे कारण है कि लोग मीरा को कृष्ण प्रेम में डूबा देखते थे। वह अपनी सुधबुध खोकर कृष्ण की मूर्ति के आगे नृत्य करती हैं। कृष्ण के प्रेम में रंगकर वह अपना घर बार सब छोड़ देती है। वह कृष्ण प्रेम में बावली होकर घूमती है। इसके विपरीत कुटुम्बियों को लगता है कि मीरा ने राजपरिवार की नाक कटा दी है। वह एक रानी होकर गली-गली मारी-मारी फिरती है। साधु-संतों की संगत की हुई है। एक रानी को यह शोभा नहीं देता है। यही कारण है कि लोगों की मीरा के प्रति अलग-अलग धारणाएँ बनी हुई हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. मीरा ने प्रेम की लता को आँसुओं के जल से सींच-सींचकर पल्लवित किया।
2. मीरा के काव्य का मुख्य स्वर भक्ति है।
3. प्र० सं० 87 पर देखिए।
4. मीरा कृष्ण को पति रुप में चाहती थी।
5. मीरा ने भव-सागर को पार करने का उपाय बताया है कि अपने आराध्य पर पूरी निष्ठा एवं समर्पण भाव से आस्था रखो और अपना जीवन पूर्णतया सत्य पर आश्रित करो, ऐसा करने से सद्गुरु की कृपा तथा परमात्मा की वत्सलता से संसार सागर को पार किया जा सकता है।
6. मीराबाई ने अपने काव्य में श्रंगार रस के दोनों पक्षों का (वियोग और संयोग) प्रयोग किया है।
7. प्र० सं० 88 पर देखिए।
8. मीरा ने कृष्ण के साथ अपना जन्म जन्मान्तरों के साथ दिखाकर एक निष्ठ प्रेम का सन्देश दिया है।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. मीरा अपने ह्रदय में कृष्ण को बसाना चाहती थी।
2. ज्ञानरुपी अमूल्य रत्न परमात्मा की कृपा से प्राप्त होता है।
3. मीरा कृष्ण के प्रेम की दीवानी थी।
4. साधुओं की संगति से मीरा का ह्रदय पूर्ण रुप से कृष्णमय हो गया।
5. मीराबाई को कृष्ण के न मिलने का दुख था।
6. मीरा के लिए अमूल्य वस्तु कृष्ण-भक्ति थी।
7. मीराबाई ने संसार की तुलना चौसर के खेल से की है। जिस प्रकार चौसर का खेल क्षण भर में समाप्त हो गया है, उसी प्रकार यह संसार क्षण भंगुर है।
8. मीराबाई ने प्रेम-वेल को आँसुओं से सींचा है।

व्याकरण एवं रचना बोध

1. ब्रजवासी – ब्रज का वासी
   चरण-कमल – चरण और कमल
   गिरधर – गिरि को धारण करने वाला अर्थात् कृष्ण
2. कृपा, आनंद, नयन
3. (क) अनुप्रास अलंकार, (ख) उत्पेक्षा अलंकार, (ग) रुपक अलंकार
4. रुपक अलंकार का उदाहरण
   पायो जी म्हैं, तोराम् रतन धन पायो।
   अनुप्रास – मोहनी मूरति साँवरि सूरत।
5. बहुत बड़ा,
   खेवनहार, मल्लाह, नाविक
   अमूल्य
6. गिरिधर – केशव, गोपाल, कृष्ण, माधव।
   सोभित – सुन्दर, सजीता, सुसन्जित, अलंकृत।
   निशिदिन – अहर्निश, अहोरात्र, अहरह।

❖❖

3

दोहा

–रहीम

(जीवन काल–वर्ष 1556–1627 ई.)

रेखांकित अंशों के प्रश्न छात्र स्वयं करें।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. प्र0 सं० 91 पर देखिए।
2. रहीम ने भक्ति, नीति, ज्ञान, वैराग्य सम्बन्धी दोहे लिखे हैं। इनके नीति सम्बन्धी दोहों में सांसारिक ज्ञान कूट-कूट कर भरा है। रहीम, श्रीकृष्ण के भक्त थे, कृष्ण के प्रति इनका प्रेम चन्द्र चकोर के समान था। रहीम ने जो भी दोहा लिखा है, उनमें साहित्यिक ब्रजभाषा का प्रयोग हुआ है।
3. प्र० सं0 91-92 पर देखिए।
4. प्र० सं0 91-92 पर देखिए।
5. प्र० सं0 91-92 पर देखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. प्र० सं0 91 पर देखिए।
2. रहीम नीति श्रंगार भक्ति और श्रंगार इन तीनों विषयों को लेकर अपनी काव्य रचना करते थे।

   नीति सम्बन्धित दोहा –

   रहिमन देख बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि।

   जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तलवार।

   रहीम की धर्मनीति उदारतावादी मानवीय मूल्यों की संवाहिका है, जहाँ हर आदमी का महत्व है।
3. कवि रहीम को लोक जीवन का गहरा अनुभव था। वे इसी अनुभव के कारण जीवन के लिए उपयोगी वस्तुओं की सूक्ष्म परख रखते थे। उन्होंने अपने दोहे में मनुष्य को सीख दी है कि वह बड़े लोगों के साथ पाकर छोटे लोगों की अपेक्षा और तिरस्कार न करें, क्योंकि छोटे लोगों द्वारा जो कार्य किया जा सकता है वह बड़े लोग उसी प्रकार नहीं कर सकते हैं, जैसे सुई की सहायता से मनुष्य जो काम करता है, उसे तलवार की सहायता से नहीं किया जा सकता है। सुई और तलवार दोनों का ही अपनी-अपनी जगह महत्व है।
4. रहीम के अनुसार सच्चे मित्र की परीक्षा विपत्ति के समय होती है। सच्चा मित्र वही होता है जो विपत्ति के समय सहायता करता है। झूठा मित्र विपत्ति के समय पास नहीं आता है।
5. रहीम के अनुसार उत्तम स्वाभाव वाले लोगो पर कुसंग का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
6. रहीम ने अवधी एवं ब्रजभाषा में काव्य- सृजन किया है।
7. रहीम ने प्रेम-सम्बन्ध को धागे के समान बताया है प्रेम धागे के समान होता है, जिस प्रकार धागा टूटने पर उसे जोड़ा जाए तो एक गाँठ पड़ ही जाती है।

   उदाहरण - रहीमन धागा प्रेम का, मत तोरो चटकाय, टूटे पे फिर ना जुरे, जुरे गाँठ परी जाय।
8. सुई के द्वारा कवि ने मनुष्य को परोपकार की प्रेरणा दी है। उदाहरणार्थ –

   रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि।

   जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तरवारि।।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. नेत्रों से निकले आँसू हृदय के दुख को व्यक्त कर देते हैं।
2. कवि रहीम के अनुसार जो व्यक्ति दीन व्यक्तियों के प्रति दया-भाव रखता है, वही दीनबन्धु के समान होता है।
3. अपने वंश को बढ़ते हुए देखकर अपार हर्ष होता है। यह सुख ऐसा होता है, जिस प्रकार बड़ी आँखें निहार कर आँखों को सुख होता है।
4. आँखों से निकले आँसू व्यक्ति के हृदय के दुख को प्रकट करते हैं।
5. अच्छे स्वभाव के व्यक्ति कुसंगति की संगत में बिगड़ जाते हैं।
6. उत्तम स्वभाव वाले व्यक्तियों पर दुर्जनों का प्रभाव नहीं पड़ता है।
7. कवि ने सच्चे मित्र का लक्षण बताया है कि सच्चा मित्र विपत्ति में साथ नहीं छोड़ता है।
8. दीन-दु:खियों के साथ हमारा व्यवहार बेहद संवेदनशील होना चाहिए।

व्याकरण एवं रचना बोध

1. **अर्थ** – मनमुटाव होना

   वाक्य प्रयोग– किसी तीसरे के आने से दो मित्रों में बेवजह मनमुटाव हो गया।

   अर्थ – जी लगना।

   वाक्य प्रयोग– राम को पढ़ाई में मन लगाना चाहिए।

अर्थ – आरोप लगाना।

वाक्य प्रयोग– मीरा तुम बेवजह ही प्रिया पर उँगली उठा रही हो। सच को परखने का प्रयास करो।

2. (अ) इसमें अनुप्रास अलंकार है, क्योंकि इसमें एक वर्ण की आवृत्ति एक से अधिक बार हुई है।

   लक्षण - जहाँ एक ही वर्ण की आवृत्ति एक से अधिक बार हो वहाँ अनुप्रास अलंकार होता हैं।

   (ब) यहाँ एक वर्ण की आवृत्ति एक से अधिक बार हो वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है, इसलिए इसमें अनुप्रास अलंकार हैं।

   (स) अनुप्रास अलंकार

3. रहीम दास जी कहते हैं कि जो अच्छे स्वाभाव के व्यक्ति होते हैं, उनको बुरी संगति भी नहीं बिगाड़ पाती। जिस प्रकार जहरीले साँप सुगन्धित चन्दन के वृक्ष पर लिपटे रहने पर भी उस पर कोई जहरीला प्रभाव नहीं डाल पाते।

   इस प्रकार रहीम ने बताया है कि श्रेष्ठ प्रकृति के लोगों पर बुरे लोगों का प्रभाव नहीं पड़ता है।

4. भुजंग– साँप, विषधर, नाग, काकोदर

   नैन – आँख, नेत्र, चक्षु, नयन

   प्रीति – प्रेम, स्नेह, राग, प्यार, अनुराग।

5. इस छन्द में (बरवै छन्द) 19 मात्राएँ होती हैं। पहले और तीसरे चरण में 12-12 मात्राएँ तथा दूसरे और चौथे चरण में 7-7 मात्राएँ होती हैं। अंत में 151 या 551 स्वर होने चाहिए।

   सोरठा – इस छन्द के विषय चरणों में 11-11 तथा समचरणों में 13-13 मात्राएँ होती हैं।

❖❖

4

प्रभुजी तुम चन्दन हम पानी

—सन्त रैदास

(जीवनकाल सन् 1399–1527 ई.)

रेखांकित अंशों के प्रश्न छात्र स्वयं करें।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. प्र० सं० 96 पर देखिए।
2. रैदास की रचनाओं में भक्ति की सच्ची भावना समाज में व्यापक हित की कामना तथा मानव प्रेम से ओत-प्रोत होती थी। इसलिए उसका श्रोताओं के मन पर गहरा प्रभाव पड़ता था। उनकी रचनाओं में खण्डन-मण्डन की प्रवृत्ति नहीं थी। उन्होंने जात-पात के विरुद्ध संघर्ष किया, वो समानता के पक्ष धर थे।
3. प्र0 सं० 96-97 पर देखिए।
4. प्र0 सं० 96 पर देखिए।
5. रैदास जी कहते हैं कि हे प्रभुजी 'आप चन्दन हैं और मैं पानी, जिसकी सुगन्ध मेरे अंग-अंग में समा गयी है। हे प्रभुजी! आप इस उपवन के वैभव हैं और मैं मोर। मेरी दृष्टि आपके ऊपर लगी हुई है जैसे चकोर चन्द्रमा की तरफ देखता रहता है। हे ईश्वर! आप दीपक हैं और मैं उस दीप की बाती हूँ जिसकी ज्योति निरन्तर जलती रहती है। हे ईश्वर आप मोती हैं और मैं उस मोती में पिरोया जाने वाला धागा हूँ। यह स्थिति उसी प्रकार है जैसे सोने और सुहागा के मिलने पर होता है। हे प्रभुजी! आप स्वामी हैं और मैं आपका दास हूँ। रैदास के मन में ईश्वर के प्रति इसी तरह का भक्तिभाव है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. रैदास ने सोने तथा सुहागा की बात भगवान और स्वयं के लिए कही है। उन्होंने स्वयं को सोना और भगवान को सुहागा कहा है।
2. प्र० सं० 96 पर देखिए।
3. प्र0 न 5 दीर्घ उत्तरीय का उत्तर देखिए।
4. रैदास भक्तिकालीन कवि हैं और उन्हें भारतीय कविता की भक्ति शाखा का प्रमुख कवि माना जाता है। रैदास भक्ति आन्दोलन के एक प्रमुख कवि थे और अपनी भक्ति कविताओं के लिए जाने जाते थे। जो भगवान के गुणों की प्रशंसा करते थे। वह निचली जाति से ताल्लुक रखते थे और उनकी कविताओं में उनके अनुभवों एवं संघर्षों को दर्शाया गया है।
5. मोती और धागा से कवि का अभिप्राय है कि यदि भगवान मोती है तो भक्त धागे के समान है जिसमें मोती पिरोए जाते हैं। उसका असर ऐसा होता है जैसे सोने में सुहागा डाला गया हो अर्थात् उसकी सुन्दरता और भी निखर जाती है।
6. संत रैदास कहते हैं कि अन्तर्मन की पवित्रता ही सच्ची ईश्वर भक्ति है। इसके लिए व्यक्ति धार्मिक कर्मकांड की बजाय विनम्र होकर निरन्तर कर्म करता रहे।
7. रैदास अपने प्रभु की भक्ति सेवक के रुप में करना चाहते थे।
8. निर्गुण काव्यधारा के दो कवि नानक और कबीर हैं इन्होंने अपने काव्यों के माध्यम से असंयम, अनाचार और आडम्बरों का विरोध किया, इनमें खानपान, आचार-विचार, शुद्धता और सदाचार को विशेष महत्त्व दिया।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. रैदास की दो रचना हैं - वाणी और आदि गुरु ग्रंथ साहिब।
2. रैदास भक्तिकाल के कवि थे।
3. रैदास को संत रविदास, गुरु रविदास नाम से जाना जाता है।
4. रैदास का जन्म सन् 1399 का माना जाता है।
5. भक्त कवि अनन्तदास के अनुसार रैदास का निर्वाण 1584 संवत् को हुआ था।
6. रैदास की रचनाएँ उनके शिष्यों द्वारा लिखी गई हैं।
7. रैदास कृत 'आदि गुरु ग्रन्थ साहिब' में 40 पद हैं।
8. रैदास जी की रचनाएँ गेयात्मक शैली पर आधारित हैं।

व्याकरण बोध

1. रात्रि, ज्योति, चन्द्र।
2. (क) अनुप्रास अलंकार, (ख) उपमा अलंकार
3. श्रृंगार रस तथा प्रसाद गुण है।
4. दीपक — प्रदीप, दीप, दीया, ज्योति, चिराग।
   स्वामी — प्रभु, ईश, परमात्मा, भगवान।
   दास — सेवक, नौकर, चाकर, अनुचर, भृत्य।
5. तरल, तम या तिमिर, बिछुड़ना।

❖❖

5

प्रेम माधुरी

–भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

(जीवनकाल सन् 1850–1885 ई.)

रेखांकित अंशों के प्रश्न कीजिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. प्र0 सं० 99 पर देखिए।
2. प्र0 सं० 99-100 पर देखिए।
3. प्र0 सं० 99-100 पर देखिए।
4. प्र0 सं० 99-100 पर देखिए।
5. प्र0 सं० 100 पर देखिए।
6. प्र0 सं० 100 पर देखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. श्रीकृष्ण को गोपियाँ इसलिए भूल नहीं पाती हैं क्योंकि उनका स्वयं मन ही जाकर श्रीकृष्ण में बस गया था।
2. कृष्ण के वियोग में गोपियों की मनोस्थिति ठीक नहीं वे कृष्ण से बहुत प्रेम करती हैं।
3. कूप ही में यहाँ भाँग परी है, से कवि का आशय है कि सारे ब्रजवासियों पर श्रीकृष्ण के प्रेम का नशा चढ़ा हुआ है।
4. श्रीकृष्ण को भूलने में गोपियाँ अपने को असमर्थ इसलिए मानती हैं, क्योंकि उनका स्वयं मन ही जाकर श्रीकृष्ण में बस गया था।
5. गोपियाँ उद्धव से ज्ञान का उपदेश वापस ले जाने के लिए इसलिए कह रही हैं क्योंकि ब्रज में उसको कोई ग्रहण नहीं करेगा।
6. गोपियों की आँखें कृष्ण को नयन भरकर नहीं देख पायीं, अत: उनके वियोग में मरने के उपरान्त जिस-जिस लोक में वे जायेंगी, उन्हें पश्चाताप रहेगा।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. शीर्षक 'प्रेम-माधुरी' में वर्षा ऋतु' का वर्णन है।
2. आधुनिक युग का जनक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को कहा जाता है।
3. खड़ी-बोली के युग प्रवर्तक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र हैं।
4. भारतेन्दु 'भारतेन्दु युग' के रचनाकार हैं।
5. गोपियाँ, श्रीकृष्ण में वियोग में व्याकुल थीं।
6. भारत-दुर्दशा, नीलदेवी, चन्द्रावली ये तीन रचनाएँ भारतेन्दु जी की हैं।
7. भारतेन्दु जी का जन्म 1850 ई. में काशी में हुआ था।
8. भारतेन्दु द्वारा सम्पादित पत्रिकाओं के नाम हैं - हरिश्चन्द्र मेंगजीन, काविवचन-सुधा, हरिश्चन्द्र पत्रिका।

व्याकरण एवं रचना बोध

1. प्रेम-माधुरी में सवैया छन्द का प्रयोग किया गया है।
2. अनुप्रास अलंकार
3. **(i) अर्थ** – सबके सब लोगों का अनुचित या उच्छृंखल आचरण करने लगना।

   वाक्य प्रयोग– कुएँ का भांग मिला पानी पीकर नशे में आ गए हो।

   (ii) अर्थ – कहर ढाना

   वाक्य प्रयोग– मेरे परीक्षा में अनुर्तीण होने पर घर में जैसे प्रलय ढा गया हो।

   (iii) अर्थ – जानबूझकर लड़ाई करना

   वाक्य प्रयोग– एक तो ऐसे ही दिमाग गरम है, ऊपर से तू उलटा-सीधा बोलकर और भी आग लगा देती है।
4. कर्ण, योग, यद्यपि
5. (i) इन दुखियन को न चैन सपनेहुँ मिल्यो, बसों सदा व्याकुल कविग अकुलायेगी।

   (ii) यह संग में लागियै डोले सदा, बिन देखे न धीरज आनती है।
6. (क) यहाँ पर वर्षा ऋतु का सजीव चित्रण हुआ है कि वर्षा के कारण सम्पूर्ण हरी-भरी हो गया है तथा शीतल मन्द पवन चलने लगी है।

   (ख) विरह की व्याकुलता का स्वाभाविक चित्रण किया गया है, इसमें कवि कहते हैं कि वियोगिनी अत्यन्त व्याकुल है, जबकि श्रीकृष्ण जी ने परसों आने को कहा था और अब वर्षों व्यतीत हो गये हैं।
7. शीतल – शान्त, सुस्त, ठंडा, सर्द

   समीर – हवा, वायु, अनिल।

   नैन – नयन, आँखें, चक्षु, लोचन
8. दुखसै, ताती, विश्वासघात

❖❖

6

पंचवटी

—मैथिलीशरण गुप्त

(जीवनकाल सन् 1886–1964 ई.)

रेखांकित अंशों के प्रश्न छात्र स्वयं करें।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. प्र० सं० 104 पर देखिए।
2. मैथिली शरण गुप्त की काव्यगत विशेषताएँ —

(i) राष्ट्रीयता और गाँधीवाद की प्रधानता

(ii) गौरवमय अतीत के इतिहास और भारतीय संस्कृति की महत्ता।

(iii) पारिवारिक जीवन को भी यथोचित महत्ता

(iv) नारी मात्र को विशेष महत्त्व

(v) प्रबन्ध और मुक्तक दोनों में लेखन

3. प्र० सं० 104 पर देखिए।
4. गुप्त जी कविताओं में प्रकृति का सजीव चित्रण देखने को मिलता है। उन्होंने 'पंचवटी' में प्रकृति-चित्रण का ऐसा वर्णन किया है कि मानों वह साकार रुप में हमारे समक्ष है। वे चाँदनी रात का वर्णन करते हुए कहते हैं कि "चारु चन्द्र की चंचल किरणें खेल रही जल-थल में स्वच्छ चाँदी बिछी हुई है, अवनि और अम्बर तल में।" पृथ्वी पर निकली हरी घास की नोंके मे हिल रही हैं, मानो पृथ्वी उन्ही के द्वारा अपनी प्रसन्नता को प्रकट कर रही है।
5. प्र० सं० 104 पर देखिए।
6. गुप्त, राष्ट्रकवि के रूप में 'भारत-भारती' से प्रसिद्ध हुए तथा उन्हें 'पद्‌भूषण' पुरस्कार से विभूषित किया गया।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'पंचवटी' कविता का सारंश

   'पंचवटी' का कथानक राम साहित्य का चिरपरिचित आख्यान-शूर्पणखाँ प्रसंग है। पंचवटी में रमणीय वातावरण में राम और सीता पर्णकुटी में विश्राम कर रहे हैं तथा मदन शोभी वीर लक्ष्मण प्रहरी के रुप में कुटिया के बाहर स्वच्छ शिला पर विराजमान है। रात्रि के अन्तिम पहर में शूर्पणखाँ उपस्थित होती हैं। ढलती रात में अकेली अबला को उस वन में देखकर लक्ष्मण आश्चर्यचकित रह जाते है। लक्ष्मण को विस्मित देख वह स्वयं वार्तालाप आरम्भ करती है। और अन्ततः विवाह का प्रस्ताव करती है। लक्ष्मण को उसका प्रस्ताव स्वीकार्य नहीं होता। वार्तालाप में ही सुबह हो जाती है। पर्णकुटी का द्वार खुलता है। अब शूर्पणखाँ राम पर मोहित हो जाती है और उन्हीं का वरण करना चाहती है। दोनों ओर वह असफल होने पर विकराल रुप धारण कर लेती है। और अन्ततः लक्ष्मण उसके नाक कान काट देते हैं।
2. संसार के सभी प्राणी संध्या होने पर विराम या आराम लेना चाहते हैं, इसलिए उसे 'विराम-दायिनी' कहा गया है।
3. प्र० नं 4 दीर्घ उत्तरीय में उसका अन्तर देखिए।
4. "यह पृथ्वी सबके सो जाने पर नित्य प्रति आकाश में नक्षत्ररूपी मोतियों को फैला देती है और सूर्य सदा ही प्रातः काल हो जाने पर उनको बटोर लेता है। वह सूर्य भी नक्षत्ररुपी मोतियों को संध्यारूपी सुन्दरी को देकर अपने लोक चला जाता है।
5. शिला पर बैठे लक्ष्मण जी का व्यक्तित्व धैर्यशाली, निर्भय मन वाला वीर पुरुष के समान है, भोग करने वाले कामदेव यहाँ योगी बनकर बैठ गये हैं, ऐसे लक्ष्मण प्रतीत होते हैं।
6. कवि मैथिलीशरण गुप्त ने लक्ष्मण की तन-मयता और सम्पर्ण के विषय में कहा है कि वे इस पंचवटी में निर्भीक और कर्तव्यनिष्ठ प्रहरी के रुप में लग रहे हैं।
7. लक्ष्मण संसार के मनुष्यों से आशा करते हैं कि संसार के सभी व्यक्ति लोकोपकार में लगे रहें, अपने हित का चिन्तन करें और अपने हित के लिए दूसरों पर निर्भर न रहें।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. गुप्तजी की प्रारम्भिक रचनाएँ कोलकाता से प्रकाशित होती थी।
2. गुप्तजी की 'भारत-भारती' को ख्याति मिली।
3. मैथिलीशरण गुप्त

4. मैथिलीशरण गुप्त का जन्म 1886 ई. में चिरगाँव जिला झाँसी में हुआ था।
5. गुप्त जी ने 'पंचवटी' में रात्रि के समय का वर्णन किया है।
6. गुप्त जी को 'राष्ट्र कवि' की संज्ञा 'महात्मा गाँधी' ने दी।
7. भारत सरकार ने गुप्तजी को पद्म-भूषण उपाधि से सम्मानित किया।

व्याकरण एवं रचना-बोध

1. पाँच वटों का समूह – द्विगुसमास
   कुसुम का अयुध – तत्पुरुष समास
   वसु को धारण करती है जो अर्थात् पृथ्वी – बहुब्रीहि समास
2. लोक + उपकार, धनुर + धर, निर् + आनंद
3. कुटीर – कुटिया, झुग्गी, पर्णकुटी
   चन्द्रमा – शशी, चाँद, निशाकर
   तरु – पेड़, वृक्ष, पादप, विटप।
4. (क) अनुप्रास अलंकार
   (ख) मानवीकरण अलंकार
   (ग) रुपक अलंकार
5. सति, चेत, उदय।

❖❖

7

पुनर्मिलन

–जयशंकर प्रसाद

(जीवनकाल सन् 1889–1937 ई.)

रेखांकित अंशों के प्रश्न छात्र स्वयं करें।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. प्र0 सं० 109 पर देखिए।
2. प्र0 सं0 109 पर देखिए।
3. प्र0 सं0 109 पर देखिए।
4. प्र0 सं0 109 पर देखिए।
5. जयशंकर प्रसाद को छायावादी युग का प्रवर्तक माना जाता है।
6. प्र0 सं0 109 पर देखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

उत्तर–

1. श्रद्धा के प्रति इडा सहानुभूति देते हुए कहती है कि जीवन तो एक लम्बी यात्रा है जिसमें बिछड़े और खोये हुए आत्मीय मिल भी जाते हैं। इस जीवन का ऐसा ही प्रचलन है।
2. श्रद्धा अपने पुत्र के साथ मनु को खोज रही है, तभी श्रद्धा को घायल अवस्था में लेटे हुए अपना पति मनु दिखायी देता है, उसको देखकर श्रद्धा की आँखों में आँसू आ जाते हैं। जब श्रद्धा ने मनु को सहलाया तो उसमें चेतना आती है। श्रद्धा को अपने पास देखकर मनु की आँखों से आँसू बहने लगते हैं।

   उनका पुत्र यज्ञ भूमि के ऊँचे मन्दिर, यज्ञ मण्डप और यज्ञ वेदी को देख रहा था। तभी श्रद्धा पुत्र को बुलाती है और कहती है कि तेरे पिता यहाँ हैं, पुत्र आता है और पिता को जल पिलाता है, इस तरह नव-निर्मित परिवार का पुर्नमिलन होता है।
3. मनु के पुत्र मानव को श्रद्धा का एकमात्र सहारा बताया गया है, क्योंकि पति की अनुपस्थिति में पुत्र ही स्त्री का सहारा कहा जाता है।
4. 'पुनर्मिलन' कविता जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखित 'कामायनी' नामक महाकाव्य का अंश है। इसमें श्रद्धा अपने पति को खोज रही हैं, उसके साथ उसका पुत्र भी है। मनु श्रद्धा से रुठकर चला गया है। वह जब उसे खोजती है, तो इडा से उसकी मुलाकात होती है, वह श्रद्धा को सान्त्वना देती है, उसका पति उसे मिल जायेगा। तभी श्रद्धा को मनु घायल अवस्था में दिखाई देता है, वह पुत्र को बुलाकर पानी पिलाने को कहती है, इस प्रकार इन सभी का पुनर्मिलन होता है।
5. श्रद्धा, मनु के वियोग में व्याकुल है, वह पागलों की तरह मनु को इधर-उधर खोज रही है।
6. श्रद्धा के पुत्र के अपने पिता के प्रति सकारात्मक विचार थे।
7. प्रसाद ने प्रकृति के सुन्दर रूपों का वर्णन किया है झरना प्रेम और सौन्दर्य के साथ प्रकृति के मनोरम रूप का भी चित्रण है। इनसे कवि के छायावादी रुप के स्पष्ट दर्शन होते हैं।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. श्रद्धा गांधार देश की राजकुमारी थी।
2. जयशंकर प्रसाद को छायावादी युग का प्रवर्तक माना जाता है।
3. ध्रुवस्वामिनी और स्कन्द गुप्त जयशंकर प्रसाद के दो नाटक हैं।
4. 'कामायनी' महाकाव्य के रचनाकार जयशंकर प्रसाद हैं।
5. पाठ 'पुनर्मिलन' में श्रद्धा और उनके बेटे का मनु के साथ पुनर्मिलन का वर्णन है।
6. जंगल में श्रद्धा मनु को खोज रही है।
7. पाठ 'पुनर्मिलन में कवि ने श्रद्धा की विरह वेदना का वर्णन किया है।

व्याकरण बोध

1. (क) रुपक अलंकार

   (ख) रुपक अलंकार
2. (क) वियोग श्रंगार रस

   (ख) वियोग श्रंगार रस
3. शूल – पीड़ा, दर्द, चुभन

   व्यथा – दुखी, पीड़ा, वेदना, कष्ट

   नव – नवीन, नया, नूतन

   सिन्धु – सागर, उदधि, जलधि।
4. अप्रवासी, अशूल, अदृश, पाप, साई
5. प्र + वासी, अ + धीर, पर + उपकार, महा + देव

❖❖

8

दान

–सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

(जीवनकाल सन् 1896–1961 ई.)

रेखांकित अंशों की प्रश्न छात्र स्वयं करें।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. प्र० सं० 114 पर देखिए।
2. 'निराला' जी की काव्यगत विशेषताएँ –

   निराला जी के काव्य में ओज, राष्ट्र-प्रेम, आध्यात्म, रहस्य एवं सम. ाजवादी चिन्तन आदि की झलक मिलती है। इनकी भाषा धारा प्रवाह शुद्ध खड़ी बोली है। इन्होंने मुक्त छन्द का विकास कर आधुनिक हिन्दी कविता को नया आयाम दिया।
3. प्र0 सं० 114 पर देखिए।
4. निराला की 'दान' का भूलभाव है कि उन्होंने 'दान' कविता के माध्यम से धनाढ्य लोगों पर प्रहार किया है, जो बन्दरों को मालपुए खिलाते हैं और निर्धन मनुष्य उन्हें बेबसी से देखते रह जाते हैं।
5. प्र० सं0 114-115 पर देखिए।
6. प्र0 सं० 114-115 पर देखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. कानों में प्राणों की कहानी, से कवि का आशय है कि हमारे कानों के पास से जब यह हवा गुजरती है तो ऐसा प्रतीत होता है मानो वह चुपचाप से अपने मन की बात कह रही है।
2. दान कविता में दीनों, असहाय, और शोषितों के प्रति संवेदना व्यक्त की गई है। एक दिन निराला घूमते-फिरते नदी के पुल पर जा पहुँचे पुल पर बहुत से बन्दर बैठे हुए थे। रास्ते में एक भिखारी भी बैठा हुआ था। नीचे शिवजी का मन्दिर है। शिवजी के ऊपर चावल तिल आदि चढ़ाने का तांता लगा हुआ है। एक ब्राह्मण पूजा-पाठ करने के पश्चात् झोली लेकर पुल पर आया। झोली से पुए निकालकर बन्दरों को खिलाने लगा, लेकिन भिखारी की ओर देखा तक नहीं। कवि को यह देखकर बहुत कष्ट होता है।
3. कवि ने प्रकृति को धन्य कहा है क्योंकि प्रकृति ने मानव को सौन्दर्य, गीतात्मकता, विविध रंग, गन्ध, भाषा, भाव रचना आदि वस्तुँ अपने आप प्रदान की है।
4. निराला जी ने 'दान' कविता में समाज की इस अमानवीय प्रवृत्ति पर व्यंग्य किया है कि भक्त लोग एक भूखे मनुष्य को भोजन कराने के स्थान पर बन्दरों को पुए खिलाते हैं और यह समझते हैं कि इससे उन्हें परम पुण्य की प्राप्ति होगी।
5. शिवजी की कृपा पाने के लिए लोग उन पर दूब की नाल, चावल, तिल, दूध तथा जल चढ़ाते हैं।
6. प्र0 सं0 4 का दीर्घ उत्तरीय उत्तर देखिए।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. निरालाजी की कविता का शीर्षक 'दान' है।
2. निराला जी के दो उपन्यास अप्सरा और अलका हैं।
3. निराला जी ने 'समन्वय', 'मतवाला', 'गंगा-पुस्तक' माता तथा सुधा, पत्रिकाओं का सम्पादन किया है।
4. मनुष्य को प्रकृति से सौन्दर्य, गीतात्मकता, विविध रंग, गन्ध, भाषा, भाव रचना आदि वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं।
5. निराला जी को प्राप्ति का सदस्य इसलिए कहा जाता है क्योंकि उन्होंने प्रकृति का अन्त: करण की गहराई से विवेचन अपने काव्य में किया है।
6. निराला जी का जन्म 1896 ई. में मेदिनी पुर (बंगाल) में हुआ था।

व्याकरण बोध

1. सत् + जन, श्रीमन + नारायण, नि: + छल।
2. (क) वीप्सा अलंकार, (ख) यमक अलंकार।
3. दूब का दल, छन्द और बंध, कृष्ण की हो जो काय।
4. ब्राह्मण – पंडित, विप्र, द्विज, वामन

   सूर्य – भानु, भास्कर, दिनकर, रवि

   बन्दर – कपि, मर्कट, शाखामृग
5. दिवा – रात्रि

   मौन – अशान्ति

   क्षीण – मोटा

❖❖

9

उन्हें प्रणाम

–सोहन लाल द्विवेदी

(जीवनकाल सन् 1906–1988 ई.)

रेखांकित अंशों के प्रश्न छात्र स्वयं करें।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. प्र0 सं0 118 पर देखिए।
2. प्र० सं0 118 पर देखिए।
3. सोहन द्विवेदी ने 'उन्हें प्रणाम' कविता में संयमी, वीर, प्रणवीर, बलिदान करने वाले दृढ़-निश्चयी, दीन-रक्षक, स्वतन्त्रता की पुकार लगाने वाले, निर्भय, राष्ट्र निर्माता, गाँधी का जयगान किया है। इन जैसे वीर दीन और दु:खियों की सहायता करने में लज्जित नहीं होते। वे किसी वेष तथा देश में रहें, हमेशा अपने कर्त्तव्य-पालन में लगे रहते हैं। उनका उद्देश्य मानवता की स्थापना है। वे शोषण और साम्राज्यवाद से लोहा लेते है। वे जनता की सेवा करने और उनमें चेतना लाने के लिए घूमते रहते हैं। कवि बार-बार ऐसे ही वीरों को प्रणाम करता है।
4. प्र0 सं० 118 पर देखिए।
5. द्विवेदी जी की उन्हें प्रणाम कविता कर्मनिष्ठों, **पीड़ित द्वारकों**, बलिदानी देशभक्तों और स्वतन्त्रता के दीवानों के लिए एक शब्द श्रद्धांजलि है। कवि ने आशा व्यक्त की है कि देशवासियों के बलिदान व्यर्थ नहीं जायेंगे और देश में स्वतन्त्रता की ज्वाला जगेगी, जिससे सारे पाप-ताप भस्म हो जायेंगे।
6. प्र० सं० 118 पर देखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. प्र0 सं० 118 पर देखिए।
2. कवि की दृष्टि में वे महापुरुष वन्दनीय हैं जो अपने देश के गरीब, पीड़ित लोगों की सेवा करने और उन्हें उन्नत करने में सदैव तत्पर रहते हैं।
3. कवि ऐसे अज्ञात नाम वाले महापुरुषों को प्रणाम करने को कहते हैं जो सदैव दीन-हीन दु:खियों के सहयोगी बन मानवता के उपासक रहे हैं।
4. (i) देश प्रेम का अर्थ है - देश से लगाव, देश के प्रति अपनापन।

   (ii) सच्चा देश प्रेमी अपने देश के लिए तन-मन अर्पित कर देता है।

   (iii) देश-प्रेम एक पवित्र भावना है, निस्वार्थ प्रेम है, दीवानगी है।

   (iv) देश के लिए न्यौछावर हो जाने से बढ़कर और कोई गौरव की बात नहीं है।

   (v) देश प्रेम की भावना धन-दौलत, समृद्धि, सुख, वैभव आदि में सबसे ऊपर है।
5. कवितानुसार घावों पर मरहम लगाने का कार्य सहृदय महापुरुष करते हैं।
6. देशभक्त देश-सेवा के उद्देश्य के लिए नगर-नगर धूल चाटते हैं।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. राष्ट्र निर्माता के लिए कवि ने 'उन्हें प्रणाम' कहा है।
2. कवि के लिए सहृदय महापुरुष वन्दनीय है।
3. भैरवी, वासवदत्ता तथा कुणाल है।
4. कवि ने सह्रदय महापुरुषों के प्रति श्रद्धा व्यक्त की है।

व्याकरण बोध

1. अन् + आगत्, सर्व + उदय, पौ + अन्, अति + आचार
2. अशान्ति, कठोर, निर्बल, अज्ञात
3. यमक अलंकार
4. मादक — विशेष्य, मुस्कान - विशेषण

   दृढ़ — विशेष्य, दीवार-विशेषण

   सत्य — विशेष्य, आत्मा-विशेषण
5. मुस्कान — आनन्द, हर्ष, सुख

   ज्वाला — दहन, धूमकेतू, ज्वलन

   प्रभात — भोर, सुबह, सवेरा, प्रात:काल

   पावन — पवित्र, निर्मल, स्वच्छ।

❖❖

10

पथ की पहचान

–हरिवंशराय बच्चन

(जीवनकाल 27 नवम्बर 1907–18 जनवरी 2003 ई.)

रेखांकित प्रश्नों को छात्र स्वयं करें।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. प्र० सं० 122 पर देखिए।
2. प्र० सं० 122 पर देखिए।
3. मधुशाला बच्चन जी की अनुपम काव्य-कृति है। इसमें एक सौ पैंतीस रुबाइयाँ है। (यानी चार पंक्तियों वाली कविताएँ) जिसमें सूफीवाद का दर्शन होता है।
4. कवि 'पथ की पहचान' कविता के माध्यम से यह सन्देश देना चाहते हैं कि व्यक्ति को विवेकपूर्वक किसी कार्य को चुनना चाहिए, फिर आने वाली किसी भी बाधा से घबराये बिना साहसपूर्वक निरन्तर आगे बढ़ते रहना चाहिए। आगे बढ़ते हुए आदर्श और यथार्थ का उचित समन्वय होना चाहिए।
5. 'पथ की पहचान' कविता में कवि पथिक के माध्यम से यह प्रेरणा देते हैं कि मनुष्य को अपने पथ की पहचान स्वयं करनी चाहिए, क्योंकि जीवन के मार्ग में अपने अनुभव सबसे श्रेष्ठ होते हैं। इस मार्ग का निर्धारण किसी दूसरे के उपदेश से या पुस्तकों को पढ़कर नहीं किया जा सकता है। कुछ मनुष्य ऐसे अवश्य रहे हैं जो अपने पथ पर अपने कदमों के निशान छोड़ गये हैं। हमें उनसे अवश्य कुछ सहायता प्राप्त हो सकती है।

   कवि कहते हैं कि जीवन के मार्ग का निर्धारण करके दृढ़-निश्चय के साथ चल पड़ना ही श्रेयकर है। अनिश्चय की स्थिति में बार-बार मार्ग बदलने से तथ्य की प्राप्ति नहीं हो पाती। कवि कहते हैं कि किसी मनुष्य का यह सोचना कि पथ निर्धारण में उसे ही कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है, गलत है। पूर्व के सभी मनुष्यों को भी अपने पथ का निर्धारण करना पड़ा था और बाधाएँ उनके सामने भी आयी थीं।
6. प्र० सं० 122 पर देखिए।
7. कवि ने पथिक को अपने मन में यह प्रण लेने की बात कही है कि लक्ष्य की प्राप्ति के लिए साहस, बुद्धि और विवेक के साथ चलना है तथा परेशानियों से हार न मानकर अपना लक्ष्य प्राप्त करना है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. यात्रा में विघ्न-बाधाओं को बधाई का प्रतीक बताया गया है।
2. दीर्घ उत्तरीय में प्रश्न न० 4 का उत्तर देखिए।
3. हरिवंशराय को पी.एच.डी. की उपाधि कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से मिली।
4. बेकार की चिन्ता में न पड़ने से यात्रा सरल बन सकती है। पथ अच्छा है या बुरा यह चिन्ता त्याग कर पथ पर चलने को कवि ने कहा है। पथ अच्छा है या बुरा इस चिन्ता में पड़ने से पथ पर कठिनाइयाँ बढती हैं।
5. बच्चन जी के अनुसार जीवन के लक्ष्य को सही पथ पर चलकर प्राप्त किया जा सकता है।
6. कवि ने पथिक को अपने मन में अहिंसा के पथ पर प्रण कर लेने की बात कही है।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. हरिवंशराय बच्चन आधुनिक युग के कवि हैं।
2. बच्चन जी की सबसे लोकप्रिय रचना का नाम 'मधुशाला' है।
3. व्यक्ति को विवेकपूर्वक किसी कार्य का चयन करना चाहिए और निरन्तर अपने पथ पर अग्रसर रहना चाहिए।
4. व्यक्ति को विवेकपूर्वक किसी कार्य को चुनकर उस पथ पर चलना चाहिए।
5. मुक्तक एवं भावात्मक रीति रोली का प्रयोग हुआ है।
6. बच्चन जी की कविताओं में शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली का प्रयोग हुआ है।

व्याकरण बोध

1. (क) अतिशयोक्ति अलंकार

   (ख) उत्प्रेक्षा अलंकार

   (ग) मानवीकरण अलंकार
2. अनु+मान, अ+संभव, अव+धान, अन+गिनत।
3. सरिता – नदी, तटिनी, दरिया, सलिला।

   पथ – मार्ग, रास्ता, सड़क।

   नयन – चक्षु, नेत्र।

   स्वर्ग – सुरलोक, देवलोक, ब्रह्मधाम।
4. वीररस इन पक्तियों में है इसका स्थायी भाव उत्साह है।

❖❖

11 बादल को घिरते देखा है

—नागार्जुन

(जीवनकाल सन् 1911–1998 ई.)

रेखांकित प्रश्नों को छात्र स्वयं करें।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. प्र0 सं0 126 पर देखिए।
2. प्र0 सं० 126 पर देखिए।
3. प्र० सं0 126 पर देखिए।
4. 'बादल को घिरते देखा है' कविता में कवि के अनुसार निर्मल, चाँदी के समान सफेद और बर्फ से मण्डित पर्वत-चोटियों पर घिरते हुए बादलों से सम्पूर्ण वातावरण अत्यन्त मनोहारी दिखाई देने लगता है।
5. कवि नागार्जुन ने पाठ में हिमालय पर्वत पर स्थित कैलाश पर्वत की चोटी पर घिरते बादलों के सौन्दर्य का वर्णन इस प्रकार किया है कि निर्मल, चाँदी के समान सफेद और बर्फ से मण्डित पर्वत-चोटियों पर घिरते बादलों से सम्पूर्ण वातावरण अत्यन्त मनोहारी दिखाई देने लगता है।
6. देवदार वन में लाल और सफेद भोज पत्रों से सजी झोपड़ी में किन्नर और किन्नरियाँ निवास करते हैं, वे फूलों का गहना, गले में नीलम की माला धारण किए हुए हैं, वे सभी मदिरा का पान कर रहे हैं, मदमस्त होकर बाँसुरी बजा रहे हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. दीर्घ उत्तरीय प्र0 न० एक का उत्तर देखिए।
2. दीर्घ उत्तरीय प्र० न० छह का उत्तर देखिए।
3. दीर्घ उत्तरीय प्र० न० एक का उत्तर देखिए।
4. कवि ने कविता में कस्तूरी मृग का वर्णन किया है, जो बहुत ही सुगन्धित होता है। लेकिन अपनी सुगन्ध से अनजान होने के कारण वह सम्पूर्ण हिमालय पर्वत पर इधर-एधर बैचेन होकर भटकता है, जब उसे वह सुगन्ध नहीं मिलती तो वह चिढ़ जाता है।
5. कवि का अभिप्राय है कि मैंने चकवा और चकई को हिमालय स्थित मानसरोवर के किनारे शैवाल की हरी चादर पर प्यार-भरी छेड़छाड़ करते देखा है अर्थात् रात-भर विरह वेदना से उबरकर सुबह जब दोनों मिलते हैं तो वे एक दूसरे के साथ छेड़छाड़ और प्यार भरी क्रीड़ाएँ करते हैं।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. कवि नागार्जुन का वास्तविक नाम वैद्यनाथ मिश्र था।
2. रतिनाथ की चाची, वरुण के बेटे, खून और शोले, तुमने कहा था।
3. नागार्जुन आधुनिक युग के कवि हैं।
4. (1) हिमालय पर्वत का आकर्षण सदैव अद्‌भुत होता है।
   (2) देव स्वरुप व पूजनीय पर्वत विस्मयकारी व सौन्दर्य से भरपूर है।
   (3) हिमालय पर्वत पर प्राकृतिक सौन्दर्य का भण्डार माना गया है।
   (4) हिमालय, दुनिया की सबसे ऊँची और सबसे विस्तृत पर्वत श्रंखला है।
   (5) हिमालय पर्वत 7 देशों की सीमाओं में फैला है जो अपनी सुषमा बिखेर रहा है। (पाकिस्तान, अफगानिस्तान, भारत, नेपाल, भूटान, चीन तथा म्यांमार)।
5. उत्तर-प्रदेश सरकार ने नागार्जुन को 'भारत-भारती' पुरस्कार से अलंकृत किया था।

व्याकरण बोध

1. इय प्रत्यय, अभि-उपसर्ग, उन उपसर्ग, इत-प्रत्यय
2. प्रणय — विशेषण, कलह-विशेष्य
   रचित — विशेषण, रजत - विशेष्य
   शीतल — विशेषण, अतिशय-विशेष्य
3. तीन पदों का समाहार — द्विगु समास
   धन की स्वामी — बहुब्रीहि
   सौ दलों का समूह — द्विगु समास
   मदिरा का घर — बहुब्रीहि समास
4. वियोग — विरह, अलगाव, छुटकारा, अभाव
   परिमल — सुगंध, सुवास, खुशबू
   धवल — श्वेत, उजला, सफेद
5. (क) मृग जिसके पास स्वयं कस्तूरी सुगन्ध होती है, वह इस नशीली सुगन्ध के पीछे-पीछे दौड़ रहा है तथा ऐसा प्रतीत होता है, जैसे बैचेन होकर इसी वातावरण में अपने ऊपर चिढ़ रहा हो।
   (ख) बहुत ढूँढने पर भी कवि को न कुबेर मिला, न उसकी अलका नगरी और मेघदूत भी कहीं छुप गया लगता है। इसका पता कौन बता सकता है। शायद कालीदास के मेघ भी यहीं पर बरस गए होंगे।

❖❖

12 अच्छा होता एवं सितार संगीत की रात

—केदारनाथ अग्रवाल

(जीवनकाल सन् 1911–2000 ई.)

रेखांकित अंशों के प्रश्न छात्र स्वयं करें।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. प्र0 सं0 130 पर देखिए।
2. 'सितार-संगीत की रात' समकालीन कवि केदारनाथ अग्रवाल की चर्चित रचना है। कवि कहता है कि सितार की ध्वनि जब निकलती है तो हर्ष एवं उल्लास का माहौल छा जाता है। शहद से परिपूर्ण पंखुड़ियाँ खुलती चली जाती हैं। अंगुलियाँ जब सितार पर थिरकती हैं तो ऐसा मालूम पड़ता है जैसे वे नृत्य कर रही हैं। हर्ष रुपी हंस दूध पर तैरने लगता है जिस पर सवार होकर सरस्वती काव्यलोक में भ्रमण करती है।
3. प्र० सं0 130-131 पर देखिए।
4. प्र० सं0 130 पर देखिए।
5. प्र० सं0 130-131 पर देखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पाठ 'अच्छा होता है' कवि ने व्यक्ति के दोषों का वर्णन किया है।
2. दूसरों का हित करने वाला, दूसरों के सुख-दुख में समान रुप से भागीदार होने वाला व्यक्ति ही समाज में लोकप्रिय होता है।
3. पाठ में हमें व्यक्ति कैसे लोकप्रिय बन सकता है, यह जानकर अच्छा लगा।
4. पाठ के अनुसार अच्छे व्यक्ति में दूसरों का हित करने का गुण होना चाहिए।
5. काव्यलोक में जब सितार बजाता है, तब सरस्वती विचरण करती है।
6. कवि का आशय है कि वह अपना ही हित सोचता।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'आग के ओठ' सितारे के बोल जैसे बोलते हैं।
2. केदारनाथ अग्रवाल का जन्म 1911 ई. में कमासिन जिला-बाँदा (उ.प्र.) में हुआ।
3. संगीत-समारोह में कौमार्य सितार से बरसता है।
4. केदारनाथ अग्रवाल प्रगतिशील काव्य-धारा के कवि हैं।
5. चरित्र का कच्चा' से कवि का अभिप्राय व्यक्ति के चरित्र में खोट से है। अर्थात् चरित्रहीन है।

व्याकरण बोध

1. **बेगुनाहों को मारने वाला —**

   वाक्य प्रयोग - आज समाज में हिंसा एवं रक्तचाप मचा हुआ है। बेगुनाह लोग मारे जा रहे हैं। कवि को आशंका है कि यह सम्पूर्ण समाज कहीं मौत का बराती न बन जाय।

   दोष युक्त

   वाक्य प्रयोग - आजकल व्यक्ति का चरित्र दगैल-दागी है

   मन की धरोहर

   वाक्य प्रयोग - आजकल व्यक्ति मन की थाती हो गया है।

2. पक्षी — खग, द्विज, परिन्दा, पखे

   शंका — संशय, संदेह, शक, अंदेशा

   नर — मनुष्य, जन, आदमी, मानव

3. (क) शान्त रस — निर्वेद

   अद्भुत रस — आश्चर्य

   (ख) श्रंगार रस — रति

4. सोना और चाँदी — द्वन्द्व समास

   दुख और दर्द — द्वन्द्व समास

   धर्म की ध्वजा — तत्पुरुष समास

5. (क) भाव यह है कि कवि अपने जीवन में कुछ अच्छा होने की आशा कर रहा है। उनके चारों ओर अंधकार रुपी निराशा छायी हुई है।

   (ख) सोने और चाँदी की फसलें मस्ती में लहरा रही हैं। जिससे उन किरणों का प्रकाश आम जन के आँगन तक पहुँच सके।

   (ग) नव-निर्माण रुपी महान यज्ञ की ज्वालाओं को मन्द करने का प्रयास मत करो।

❖❖

13

युगवाणी

—शिवमंगल सिंह 'सुमन'

(जीवनकाल सन् 1915–2002 ई.)

रेखांकित अंशों के प्रश्न छात्र स्वयं करें।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. प्र0 सं० 134 पर देखिए।
2. प्र० सं0 134-135 पर देखिए।
3. प्र० सं0 134-135 पर देखिए।
4. प्र० सं0 134 पर देखिए।
5. प्र० सं0 134-135 पर देखिए।
6. कवि ने 'युगवाणी' कविता में जीवन में व्याप्त महाजनी शोषण की वास्तविकताओं के प्रति आगाह किया है कि आज के युग में श्रमिक वर्ग शोषित एवं परेशान है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. कवि ने 'युगवाणी' कविता में मानवता के कल्याण की कामना की तथा यह आग्रह किया है कि राष्ट्र के विकास का कार्य अवरुद्ध नहीं होना चाहिए अर्थात् राष्ट्र के विकास के लिए हमें निरन्तर प्रयत्न करना चाहिए।
2. अब तो श्रमिकों का शोषण करना बन्द कर दो, नहीं तो तुम्हारी पीढ़ियाँ तुम्हारी करनी पर पछतायेंगी।
3. कवि श्रमिकों एवं कृषक वर्ग को सम्बोधित करते हुए कहता है कि मैंने क्यारी-क्यारी में तुम्हारे ही पदचिन्हों के दर्शन किये हैं। तुमने परिश्रम पूर्वक जो क्यारियाँ बोयी थीं, उन पर बढ़ती हुए फसल में आज भी तुम्हारे श्रमशील कदम झाँकते दिखाई दे रहे हैं। विकास का यही नियम है, जगह-जगह मुस्कान बिखर जाती है। इतना कठिन परिश्रम करने पर भी सर्वहारा वर्ग परेशान है। कवि शासक एवं पूँजीपति वर्ग को चेतावनी देता है कि यदि तुन असहायों की मूल समस्या का समाधान करने की अपेक्षा इनके साथ खिलवाड़ करोगे तो तुम्हें समय कभी माफ नहीं करेगा। अस्तित्व स्वयं खतरे में पड़ जायेगा।
4. कवि कहता है कि मैं जिस दिन स्वप्नों एवं कल्पनाओं का मूल्यांकन करने बैठूँगा उस दिन मेरे संघर्षों का जाला चढ़ जायेगा, मेरा संघर्ष थक जायेगा और जिस दिन विवशता मुझ पर तरस दिखायेगी अर्थात् जिस दिन मैं मजबूरों का गुलाम बन जाऊँगा, उस दिन जीवन की अपेक्षा मृत्यु का पलड़ा भारी होगा, उस दिन मृत्यु मुझे पकड़ लेगी।
5. तुम्हारी पीढ़ियाँ तुम्हारी करनी पर पछतायेगी।
6. क्योंकि श्रमिकों का शोषण हो रहा है।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय ने सुमन जी को डी.लिट की उपाधि दी।
2. 'जीवन का गान', युग का मोल।
3. सुमन जी आधुनिक काल के कवि हैं।
4. सुमन जी के पिता का नाम श्री साहब बख्श सिंह था।
5. सुमन जी के शोध-ग्रन्थ का नाम हिन्दी रासों काव्य परम्परा था।
6. युगवाणी कविता का आशय है – समयाधारित विचार। समय की माँग है कि राष्ट्र का विकास अनवरत गति से किया जाये ताकि मानवता का कल्याण हो।

व्याकरण बोध

1. अभि, कु, अ, सु
2. सूर्य, कृषक, ओष्ठ, अग्नि।
3. सन्न न रहना — तत्पुरुष समास
   सोना और चाँदी — द्वन्द्व समास
   दु:ख और दर्द — द्वन्द्व समास
   धर्म की ध्वजा — तत्पुरुष समास
4. फूल, वाचाल, अपयश, अपावन।
5. (क) जीवन में अनगिनत क्रिया-कलाप करने पड़ते हैं। इन क्रिया-कलापों से हम दूर भी नहीं रह सकते। प्राकृतिक सौन्दर्य और जीवन के धन्धे को क्या साथ-साथ लेकर चलना सम्भव है। शरीर और मन का सम्बन्ध पवित्र होता है, यह पवित्र सम्बन्ध कैसे टूट सकता है।

   (ख) समय परिवर्तनशील है। अत: इसकी परिवर्तन शीलता को देखते हुए प्रगति के प्रवाह को रोकने का प्रयास न करो। मालूम नहीं कि इस प्रकार की सुखद वायु में साँस लेने का अवसर मिले या न मिले।

संस्कृत-खण्ड

वन्दना

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. भक्तः ईश्वरं तेजस्य, वीर्यस्य, बतस्य, ओजस्य च याचते।
2. भक्त मृत्योमडिमृतं गन्तुं इच्छति।
3. ईश्वरस्य ऋहतसत्यनेत्रे स्तः।
4. ईश्वरः सत्यात्मकः अस्ति।
5. ईश्वरः एवं प्रत्यक्षं ब्रह्मस्ति।
6. ईश्वरः सत्यात्मकः अस्ति।
7. भक्तः 'अहं त्रटतं वादिष्यामि, सत्य वादिष्यामि' इति प्रतिज्ञां प्रार्थनाः करोति।
8. प्रथमे श्लोके भक्तः ईशं तेजस्य, वीर्यस्य, बतस्य, ओजस्य च याचति।
9. भक्तः मृत्योः अमृतं गन्तुम इच्छति।
10. तेजोऽसि तेजामणि धेहिं कथन भक्तः ईश्वर प्रति।

छात्र स्वयं करें। (अनुवाद)

व्याकरणात्मक बोध

1. रामौ — प्रथमा विभक्ति द्विवचन
   हरिणा — चतुर्थी विभक्ति एकवचन
   आवाभ्याम् — चतुर्थी विभक्ति द्विवचन
   भानुभ्यः — पंचमी विभक्ति बहुवचन
2. श् + अन्न, मा + अमृतं, त्व + मेव, तेजो : असि।
3. असि — लृट्लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन
   कुरु — लोट्लकार, मध्यमपुरुष, एकवचन
   वदिष्यामि — लृट्लकार, उत्तमपुरुष, एकवचन
   अवतु — लोट्लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।

❖❖

1 सदाचारः

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. सतां सज्जनानाम् आचारः सदाचारः भवति।
2. ये जनाः सद् एवं विचारयान्ति, सद् एवं वदन्ति।
   सद् एवं आचरन्ति च, ते एवं सज्जना भवति।
3. महापुरुषाणाम आचारः अनुकरणीयः।
4. विनयशीलः जनः सर्वेषां जनानां प्रियः भवति।
5. सतां सज्जनानाम् आचारः सदाचरेणाः अभिप्रायः।
6. मनुष्याणां परम धनम् आचारः अस्ति।
7. आचरात् आयुः, श्रियम्, कीर्तिम् च लभते।
8. परम धनं आचारं अस्ति।
9. वृत्तं यत्नेन संरक्षेत्।
10. सदाचारात् धैर्यम्, दाक्षिण्यम्, संयमः आत्म-विश्वासः निर्भीकता सद्गुणाः विकसित।
11. सदाचारवान् नरः दीर्घायुः प्राप्नोति।
12. श्रद्धालुरनसूर्यश्च शतं वर्षाणि जीवति।

छात्र स्वयं करें। (अनुवाद)

व्याकरणात्मक बोध

1. सत्+जनः, सत्+आचारः युक्त+आहारः तत्+एव।
2. अनुकरणीय
   करणीय में अनु उपसर्ग कराकर अनुकरणीय बना तथा अनुकरण में इय प्रत्यय लगाकर अनुकरण बना।
3. सदगुणाः में सद् उपसर्ग कहा है।
4. सदाचारस्य – षष्ठी विभक्ति एकवचन
   सज्जनाः – प्रथमा विभक्ति बहुवचन
   अस्माकं – सर्वेषां – षष्ठी विभक्ति बहुवचन

❖❖

2 पुरुषोत्तमः रामः

लघु उत्तरीय प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए —

1. **उत्तर**-रामः इक्ष्वाकु वंशे उत्पन्नः आसीत्।
2. **उत्तर**-रामः शरीरेण विष्णुमा सदृश आसीत्।
3. **उत्तर**-रामः प्रजानां हिते रतः।
4. **उत्तर**-रामः प्रजानाः कार्ये रतः।
5. **उत्तर**-रामस्य द्युर्तिमान्, धृतिमान्, बुद्धिमान्, नीतिमान् धर्मज्ञ आदयः विशिष्टा गुणाः सन्ति।
6. **उत्तर**-रामः स्मरत्यपकाराणाम् न अकरोत्।
7. **उत्तर**-रामः धनुर्वेदं विद्यायां निपुणः आसीत्।
8. **उत्तर**-रामः मृदुः भाषते।
9. **उत्तर**-रामः ग्रीवो कम्बुइव आसीत्।
10. **उत्तर**-राम धनुर्वेद विद्यायां निपुणः आसीत्।

व्याकरण बोध

1. राम द्वितीया — रामम् रामौ रामान्
   षष्ठी — रामस्य रामयोः रामानाम्
2. महा+बाहुः, महा+हुन, अजानु+बाह, महा+आरस्कः।
3. समाधि+मान, जीव+लोकस्य
   प्रशान्त+आत्मा, पुण्य+आत्मा
4. कृत्वा — प्रत्यय(त्वा) अनुकरणीय
   — उपसर्ग(अनु)
   रक्षणीय — प्रत्यय(ईय) सदगुणाः
   — उपसर्ग(सद)
5. मनुष्याणां — षष्ठी विभक्ति बहुवचन
   अस्माकं — षष्ठी विभक्ति बहुवचन
   भारतस्य — षष्ठी विभक्ति एकवचन
   सर्वेषां — षष्ठी विभक्ति बहुवचन

❖❖

3 सिद्धिमन्त्रः

1. **उत्तर**—रामदासः नारायणपुरं निवसति।
2. **उत्तर**—रामदासः प्रातः काले उत्थायं नित्यकर्माणि करोति।
3. **उत्तर**—रामदासः धर्मदासस्य उत्तिष्ठति।
4. **उत्तर**—नारायणपुरे रामदासः धर्मदासः च निवसतः।
5. **उत्तर**—धर्मदासः अनुष्ठानेन सम्पन्नम् अभवत्।
6. **उत्तर**—कर्मेव (कर्मएव) सिद्धिमन्त्रः अस्ति।
7. **उत्तर**—रामदासः धर्मदासस्य दारिद्रस्य कारणं तस्यैव अकर्मण्यता इति विचारयति।
8. **उत्तर**—अकर्मण्यता एवं धर्मदासस्य दारिद्रयस्य कारणम आसीत्।
9. **उत्तर**—धर्मदासः रामदासः धन सम्पदां कारण अपृच्छत।
10. **उत्तर**—लक्ष्मीः स्वयं निवासहेतोः उत्साह सम्पन्न क्रिया विधिज्ञं शूरं कृतज्ञं दृढ़ सोहृदं च याति।

व्याकरण बोध

1. कर्मण्यताः, धनवानः, दुःखः, सबलः।
2. महा+आत्मा, धान्य+आदि, सूर्य+उदय, धर्म+आत्मा।
3. ग्राम — गाँव, कस्बाः, देहात।
   विपन्नः — दरिद्रताः, दुःख
   लक्ष्मीः — श्रीः धनपतिः, वरलक्ष्मीः।
   सूर्यः — दिनकरः, भास्करः, दिवाकरः, भानुः।
4. दीन दुर्बलास्य, स्थाने अनुसार, वर्षास्य अन्ते, अभावेषु ग्रस्तम्।
5. ग्रामं — प्रथमा विभक्ति, द्विवचन
   पुत्रेण — तृतीया विभक्ति, एकवचन
   दारिद्रयस्य — षष्ठी विभक्ति, एकवचन
   दिने — सप्तमी विभक्ति, एकवचन
6. अभवत् — प्रथमा विभक्ति, एकवचन लङ्गलकार
   गच्छति — प्रथमा विभक्ति एकवचन लट्लकार
   निवसति — प्रथमा विभक्ति एकवचन लट्लकार
   अवदत् — प्रथम विभक्ति एकवचन लङ्गलकार

❖❖

4 सुभाषितानि

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. **उत्तर**—स्वादिष्टं हितं च औषधम् दुर्लभम्।
2. **उत्तर**—प्रसन्न वदना: सदयह्यदया: मधुर भाषका: परोपकारवश्चं मानवा: वन्दनीया: भवति।
3. **उत्तर**—क्रोधं अक्रोधेन जायते।
4. **उत्तर**—सतां मार्ग: सर्वोत्तम: भवति।
5. **उत्तर**—चक्षुषा, मनसा, वाचा कर्मणा च यो लोके प्रसादयति स: लोकप्रिय: भवति।
6. **उत्तर**—य: चक्षुणा, मनसा, वाचा कर्मणा च लोके, प्रसादयति तं लोकं प्रसीदति।
7. **उत्तर**—सुहद: विद्वान जना: लोके दुर्लभ:।
8. **उत्तर**—अनृतं सत्यं जायेत्।
9. **उत्तर**—सत्याधारस्त परस्तेत तमो हन्ति।
10. **उत्तर**—दुर्जनस्य संसर्ग त्यजेत्।
11. **उत्तर**—असाधुं साधुं वृत्या जायेत्।
12. **उत्तर**—अन्धकारे प्रवेष्टव्ये दीप: यत्नेन: वार्यताम्।

व्याकरण बोध

1. पापस्य मुक्त, गुणस्यहीन, धर्मास्य अज्ञ, कर्मस्यं अज्ञ, प्रति+दिन
2. चक्षुषा – तृतीया विभक्ति एकवचन
   दानेन – तृतीया विभक्ति एकवचन
   साधुना – तृतीया विभक्ति एकवचन
   कर्मणा – तृतीया विभक्ति एकवचन
3. भवताम – लोट्लकार प्रथमपुरुष द्विवचन
   करिष्याव – लृट्लकार उत्तमपुरुष द्विवचन
   गच्छाम: – लट्लकार उत्तमपुरुष बहुवचन
   अभबताम् – लङ्गलकार प्रथमपुरुष द्विवचन
4. सूर्य, असाधु, असत्यम्, सरतम्।
5. सम, अ, अ, स्व
6. धर्म+आचारणस्य, अस्य+एव, तदानी+मेव, देश+सष्वपि।

❖❖

5 परमहंसः रामकृष्णः

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. **उत्तर**—रामकृष्णस्य जन्म वंगेषु हुगली प्रदेशस्य अभवत्।
2. **उत्तर**—रामकृष्ण परमहंसः एकः विलक्षणः पुरुष आसीत्।
3. **उत्तर**—ईश्वरानुभवः दुखितानां जनानांसेवया पुष्यति।
4. **उत्तर**—स्वामी विवेकानन्द रामकृष्णः परमहंसस्य शिष्य आसीत्।
5. **उत्तर**—रामकृष्णस्य मुख्यः शिष्य स्वामी विवेकानन्दः आसीत्।
6. **उत्तर**—रामकृष्ण स्व कीयेन योगाभ्यास बलेनेव एतावान महान् सज्जातः।
7. **उत्तर**—रामकृष्ण सेवाश्रमाः स्वामी विवेकानन्दः स्थापिता।
8. **उत्तर**—रामकृष्णस्य जीवनम् अस्यभ्यं ईश्वर दर्शनाय शक्ति प्रददाति।
9. **उत्तर**—स्वामी विवेकानन्दस्य गुरुः रामकृष्ण परमहंसः आसीत्।
10. **उत्तर**—रामकृष्णस्य पितरौ परमधार्मिकौ आस्ताम्।
11. **उत्तर**—ईश्वरानुभवः दु:खितानां जनानां सेवया पुष्यन्ति।

व्याकरण बोध

1. परा, मूर्ति, आ, स्व।
2. सत्यस्य — षष्ठी विभक्ति एकवचन
   ईश्वरे — सप्तमी विभक्ति एकवचन
   परमहंसस्य — षष्ठी विभक्ति एकवचन
   आचरेण — तृतीय विभक्ति एकवचन
3. धर्म + आचरणस्य, सेव + अश्रमा, परम + सिद्धोऽपि, अस्य + एव।
4. यथा-शक्ति, पल-पल, गुणस्यहीन, सर्वस्यप्रिय।
5. अनिष्ठा, अनरत, भेदः, अमहतो।
6. पंचमी विभक्ति में अपादान कारक होता है।

❖❖

6 कृष्णः गोपालनन्दनः

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. **उत्तर**—कृष्णः लोकोत्तरो महापुरुष आसीत्।
2. **उत्तर**—श्री कृष्णस्य जन्म मथुरायाम् अभवत्।
3. **उत्तर**—श्रीकृष्णः सहस्त्रेभ्यः वर्षेभ्य पूर्वम् अभवत्।
4. **उत्तर**—कंसः कृष्णस्य मातुलः आसीत्।
5. **उत्तर**—देवकी कृष्णस्य माता आसीत्।
6. **उत्तर**—श्री कृष्णस्य जन्म भादुपदमासस्य कृष्ण पक्षस्य अष्टम्यां तिथौ अभवत्।
7. **उत्तर**—बाल्याकाले अयं स्वसौन्दर्येण बाललीलया च सर्वेषां जनानां मनांसि अहरत्।
8. **उत्तर**—कंसः अत्याचारी शासकः आसीत्।
9. **उत्तर**—आकाशवाणी श्रुत्वा कंसः वासुदेवं देवकी च कारागारे अक्षिपन।
10. **उत्तर**—श्रीकृष्णः स्वः उत्तमैः गुणैः परोपकार भावनाय लोकप्रियः अभवत्।
11. **उत्तर**—श्रीकृष्णस्य जितुः वासुदेव नाम आसीत्।
12. **उत्तर**—बाल्यकाले अयं स्वसौन्दर्येण बाललीलया च सर्वेषां जनानां मनांसि अहरत्।

व्याकरण बोध

1. श्रंण्वन्ति — लृटलकार प्रथम पुरुष बहुवचन
   अभवत् — लङ्गलकार प्रथम पुरुष एकवचन
   आसीत — लङ्गलकार प्रथम पुरुष एकवचन
   गच्छेतम् — विधिलिंग लकार मध्यम पु० द्विवचन
2. लोकस्यप्रिय, गोकुलस्य वासिन, नन्दस्य गृहम्, महानास्य पुरुष।
3. कुर्वती+अपि
   उभाव+अपि
   अत्या+आचारी
   अद्य+अपि।
4. इस समय, जब-तब, यहाँ-वहाँ, वर्तमान समय (आज भी)
5. लक्ष्मीः — पदमा, कमला, श्रीः
   कृष्ण : — वासुदेवः, देवकीनन्दनः, मुरारिः
   पृथ्वीः — भूः, भूमि, अचला, विश्वम्भरा
   वनः — जंगल, अरण्य, बीहड़।

❖❖

1

दीपदान

(डॉ. रामकुमार वर्मा)

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. प्र0 सं० 155-156 पर देखिए।
2. प्र० सं० 155-156 पर देखिए।
3. पन्नाधाय एक स्वामी भक्त और राष्ट्रभक्त महिला थी, वह अपने राष्ट्र के सम्मान के लिए और अपने स्वामी के पुत्र की रक्षा के लिए अपने स्वयं के पुत्र के प्राणों की बाजी लगाने से भी नही चूकी। पन्ना त्याग और बलिदान की साक्षात मूर्ति थी। उसने अपने स्वामीपुत्र की रक्षा के लिए अपने स्वयं के पुत्र का बलिदान कर दिया।
4. 'दीपदान' उत्सव का आयोजन बलवीर ने चित्तौड़ के सिंहासन के उत्तराधिकारी उदयसिंह की हत्या करने के लिए किया था।
5. दीपदान कहानी का उद्देश्य भारतीय के हृदय में देश-प्रेम और कर्त्तव्य-पालन का जज्बा पैदा करना है।
6. दीपदान कहानी का मार्मिक तथ्य है जब पन्ना को पता चलता है कि बनवीर उदयसिंह की हत्या करना चाहता है तो बड़ी चतुराई से उदयसिंह को कीरत के द्वारा महल से बाहर निकाल देती है और उसकी जगह अपने पुत्र चन्दन को सुला देती है, जब बनवीर उदयसिंह के बारे में पूछता है तो वह उस तरफ इशारा कर देती है, जहाँ चन्दन सो रहा था, बनवीर चन्दन की हत्या कर देता है, वह उफ तक नहीं करती है।
7. प्र0 सं0 155 पर देखिए।
8. बनवीर सिंह एक लालची और निर्दयी व्यक्ति था जो चित्तौड़ का राज्य प्राप्त करने के लिए किसी की भी हत्या कर सकता था। उसने विक्रमादित्य की भी हत्या करने के बाद उदयसिंह की हत्या करने के लिए एक योजना बनाई। उसने राज्य के लालच में चन्दन की उदयसिंह समझकर हत्या कर दी।
9. प्र० न० 4 का उत्तर देखिए (दीर्घ उत्तरीय में)
10. प्र० सं० 155 पर देखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. दीर्घ उत्तरीय में प्र0 न0 5 का उत्तर देखिए।
2. बनवीर चित्तौड़ पर राज्य करने के लिए उदयसिंह की हत्या करना चाहता था।
3. बनवीर ने 'दीपदान' का आयोजन उदयसिंह की हत्या के लिए किया।
4. उदयसिंह की रक्षा के लिए पन्ना ने चन्दन को उदयसिंह की शैय्या पर सुला दिया क्योंकि बनवीर उदयसिंह के बारे में पूछेगा।
5. पन्ना अनहोनी की आशंका से उदयसिंह को दीपदान में जाने से मना कर देती है।
6. 'दीपदान' एकांकी में सबसे अच्छा चरित्र पन्ना का लगा।
7. कीरत बारी उदयसिंह को छिपाकर महल से बाहर ले जाता है।
8. दीपदान एकांकी की मुख्य पात्र पन्नाधाय ने चित्तौड़गढ़ के राजकुमार उदयसिंह की प्राण रक्षा के अपने कर्त्तव्य को पूरा करने के लिए अपने पुत्र के प्राणों का बलिदान कर दिया अर्थात् अपने घर के दीप का दान कर दिया। इसलिए इसका शीर्षक 'दीपदान' पूरा सार्थक शीर्षक है।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. **उत्तर—** पन्नाधाय कीरत पर विश्वास करती थी।
2. **उत्तर—** सामली अन्त:पुर की परिचायिका थी।
3. **उत्तर—** बनवीर महाराणा साँगा के भाई पृथ्वीराज के दासी का पुत्र था।
4. **उत्तर—** चन्दन पन्नधाय का पुत्र था।
5. **उत्तर—** बनवीर चित्तौड़ पर राज्य करना चाहता था।
6. **उत्तर—** दीपदान एकांकी में पाँच पात्र हैं।
7. बनवीर ने चन्दन से पहले विक्रमादित्य की हत्या की थी।
8. सोना, उदयसिंह को नृत्य दिखाने का आग्रह इसलिए करती है, क्योंकि उदयसिंह को सोना नृत्य बहुत अच्छा लगता है।

❖❖

2 नए मेहमान

(उदय शंकर भट्ट)

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. प्र० सं० 163 पर देखिए।
2. प्र० सं० 163 पर देखिए।
3. प्र० सं० 163 पर देखिए।
4. प्र० सं० 163 पर देखिए।
5. 'नये मेहमान' एकांकी में सर्वश्रेष्ठ पात्र विश्वनाथ है, क्योंकि वह विनम्र एवं संकोची स्वभाव है। यही कारण है कि देर रात में आए अपरिचित मेहमानों से वह उनका स्पष्ट परिचय भी नहीं पूछ पाता और उनकी सेवा में लग जाता है।
6. प्र० सं० 163 पर देखिए।
7. नये महमान में पात्र विश्वनाथ का स्वभाव विनम्र एवं संकोची है, वह घर आये अपरिचित मेहमानों से उनका परिचय नहीं पूछ सकता और उनकी सेवा में लग जाता है तथा रेवती के चरित्र की विशेषता है कि वह एक पतिव्रता नारी है, वह अनेक अभावों में भी पति की सुख-सुविधाओं का ख्याल रखती है। तथा आतिथ्य सेवा भाव से रहित है, वह अतिथि आने पर खिसिया जाती है, और अपने पराये और पराये में भेद करती है। वह अंधविश्वासी भी है, वह बच्चों को पड़ोसी की छत पर सोने नहीं देती है। गर्मी में सुलाती है।
8. नये मेहमान कहानी में निम्न मध्य वर्गीय परिवार की समस्याओं को आधार बनाया है, इसके माध्यम से मध्यवर्गीय जीवन-शैली पर प्रकाश डालना लेखक का उद्देश्य है।
9. प्र० न० 7 का उत्तर देखिए।
10. नन्हेमल और बाबूलाल दो ऐसे व्यक्ति हैं, जो अपनी बाचालता के दम पर अपना उल्लू सीधा करने का प्रयास करते हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. छोटा मकान व भयंकर गर्मी के कारण विश्वनाथ मेहमानों के आगमन से आहत हैं।
2. विश्वनाथ विनम्र एवं संकोची स्वभाव के कारण मेहमानों से परिचय पूछने में हिचकिचाता है।
3. रेवती दूसरे मेहमानों के लिए खाना इसलिए नहीं बनाती क्योंकि वह अपने और पराये में भेद करती है।
4. प्र० सं० 163 पर देखिए।
5. विश्वनाथ आवास समस्या, पत्नी के स्वभाव, गर्मी आदि से दुखी था।
6. विश्वनाथ के घर की स्थिति दयनीय थी।
7. नन्हेमल और बाबूलाल विश्वनाथ के घर इसलिए आये क्योंकि वह गन्तव्य स्थान का नाम-पता भूल गये थे।
8. विश्वनाथ और रेवती आवास की समस्या, गर्मी तथा खर्चे के कारणों से परेशान थे।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. नये मेहमान एकांकी में छह पात्र है।
2. महानगरों की स्थिति दयनीय है।
3. मेहमानों के आगमन से विश्वनाथ और उनका परिवार परेशान हो गया।
4. क्योंकि वह गन्तव्य स्थान का नाम पता भूल गये थे।
5. क्योंकि वह उसका भाई है।
6. क्योंकि पड़ोसियों का स्वभाव कठोर है।
7. रेवती ने।
8. आगुन्तक गर्मी तथा थकान शान्त करने के लिए नहाना चाहते थे।

❖❖

3 व्यवहार

(सेठ गोविन्द दास)

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. प्र० सं०169 पर देखिए।
2. प्र0 सं० 169 पर देखिए।
3. प्र० सं० 169 पर देखिए।
4. "व्यवहार" एक सामाजिक और समस्यात्मक एकांकी है। इस तथ्य पर प्रकाश डालते हैं कि आज भी जर्मींदार वर्ग किसानों की बेइज्जती करता है।

   उत्तर—यह किसानों द्वारा जर्मींदारों को बेइज्जत करने वाला कार्य है।
6. **उत्तर**—नर्मदा शंकर अपने स्वामी रघुनाथ सिंह के किसान हितकारी कार्यों से सहमत इसलिए नहीं क्योंकि वह किसानों के हित में लिए गए कुछ अन्य फैसलों-लगान कम करना, कर्ज माफ करना और बिना नजराना लिए जमीन देने को गलत बताता है।
7. **उत्तर**—क्रान्ति चन्द्र एक शिक्षित नवयुवक है, जो चूरामन नामक किसान का पुत्र है। वह जर्मींदारों द्वारा किए जाने वाले किसानों के शोषण से भली-भांति परिचित है, इसलिए वह ग्रामीण किसानों का शोषण होते नहीं देख सकता है। वह एक साहसी और शिक्षित युवा है। शिक्षित युवा होने के कारण वह अपने किसानों का हित का अच्छी तरह जानता है।
8. प्र0 सं० 7 का उत्तर देखिए।
9. प्र0 सं० 169 पर देखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. प्र० न० 7 का उत्तर दीर्घ उत्तरीय में देखिए।
2. प्र0 न० 5 का उत्तर दीर्घ उत्तरीय में देखिए।
3. **उत्तर**—हमें अपने व्यवहार में समयानुसार परिवर्तन करना चाहिए।
4. **उत्तर**—नर्मदा शंकर के विचारों का अभिप्राय है, जो किसानों के हित में कार्य कर रहे हो, वह गलत है।
5. **उत्तर**—'व्यवहार' समस्या मूलक एकांकी है।
6. **उत्तर**—चूरामन एक किसान थे।
7. **उत्तर**—'व्यवहार' एकांकी ने हमारे हृदय पर प्रभाव डाला है कि व्यवहार उचित तरीके से करना चाहिए। जो लोगों के हित में हो।
8. **उत्तर**—नर्मदा शंकर आश्चर्य से स्तम्भित रघुराज सिंह को देखकर हो जाता है।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. जर्मींदार के खिलाफ किसानों को भड़काने के लिए चूरामन का बेटा क्रान्ति चन्द्र जिम्मेदार है।
2. रघुनाथ सिंह के महल की बालकनी 'व्यवहार' कहानी का तीसरा दृश्य है।
3. रघुराज सिंह का मैनेजर नर्मदा शंकर है।
4. किसानों ने अपना प्रतिनिधि क्रान्ति चन्द्र को चुना।
5. रघुनाथ सिंह अपनी बहन की शादी के उपलब्ध में भोज देते हैं।
6. चूरामन के पुत्र का नाम क्रान्ति चन्द्र है।
7. गाँव के जर्मींदार रघुनाथ सिंह ने किसानों का अपमान किया है।

❖❖

4

लक्ष्मी का स्वागत

(उपेन्द्रनाथ 'अश्क')

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. प्र० सं० 176-177 पर देखिए।
2. रोशन का चरित्र – रोशन एक मध्यम वर्गीय व्यक्ति है। वो अपनी पत्नी और पुत्र को प्यार करने वाला एक संवेदनशील व्यक्ति है। उसकी पत्नी एक माह पहले मर चुकी है। वह अपने बेटे की खातिर दूसरा विवाह नहीं करना चाहता है, वह एक आदर्श पिता के रुप में दिखाया गया है।
3. प्र० सं० 176-177 पर देखिए।
4. प्र० सं० 176 पर देखिए।
5. प्र० सं० 176-177 पर देखिए।
6. सुरेन्द्र और भाषी एक संवेदनशील लोग है जो अपने पोते की बीमारी की हालत में भी रोशन की शादी करने को तत्पर हैं, क्योंकि रोशन की शादी से उन्हें भारी भरकम दहेज मिलेगा। उन्हें लक्ष्मी (धन) से प्रेम है।
7. 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी उपेन्द्रनाथ अश्क द्वारा लिखी गई एकांकी है। जो सामाजिक विसंगतियों पर चोट करती है। इस एकांकी की कथावस्तु पारिवारिक है। लेखक ने इस एकांकी के माध्यम से अनेक सामाजिक मान्यताओं और परम्पराओं के ज्वलंत मुद्दों पर प्रश्न चिन्ह उठाया है। भाषा पात्रानुकूल है। कहानी का स्वाभाविक विकास होता है जिसमें एकांकीकार ने पुर्नविवाह की समस्या को वर्णित किया है, उसे एक सामाजिक मान्यता बनाकर प्रस्तुत किया है।
8. लक्ष्मी का स्वागत एकांकी का शीर्षक लक्ष्मी का स्वागत सर्वथा सटीक और सार्थक है। एकांकी की सारी घनाएँ इसी शीर्षक पर केन्द्रित हैं। उधर रोशन की पत्नी की असामाजिक मृत्यु हो जाती है, उसका बेटा अरुण डिफ्थीरिया नामक रोग से पीड़ित मृत्यु शैय्या पर पड़ा जीवन की अन्तिम साँसे ले रहा है, उसके चला चली का समय निकट आ गया है, तो इधर उसके माता-पिता ने उसकी दूसरी शादी करने की मन में ठान रखी है। पिता का कथन "घर आई लक्ष्मी का निरादर नहीं कर सकता" कितना हास्यपद तथा उपहासजनक प्रतीत होता है। इस प्रकार एकांकीकार ने व्यक्ति के मन में अवस्थित धन की लोलुपता को उक्त शीर्षक के माध्यम से बड़ी सूक्ष्मता के साथ दिखलाया है। अतः लक्ष्मी का स्वागत शीर्षक शत प्रतिशत उचित एवं उद्देश्यपूर्ण है।
9. दीर्घ उत्तरीय प्र० सं० 8 का उत्तर देखिए।
10. दीर्घ उत्तरीय प्र० सं० 7 का उत्तर देखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न का 6 का उत्तर देखिए।
2. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न का 9 का उत्तर देखिए।
3. प्र० सं० 176 पर देखिए।
4. प्रश्न 9 का दीर्घ उत्तरीय का उत्तर देखिए।
5. (1) रोशन की माँ में ममता नहीं है।
   (2) वह हृदयहीन महिला पात्र है।
   (3) वह धन की लोभी है।
   (4) उसमें पुत्र मोह की भावना नहीं है।
   (5) वह अपने घर में धन को ही महत्व देती है।
6. प्र० न० 9 का उत्तर दीर्घ उत्तरीय में देखिए।
7. रोशन क्रोध मे अपने पिता से कहता है कि कर लो लक्ष्मी का स्वागत।
8. लक्ष्मी के स्वागत एकांकी में रोशन सबसे अच्छा पात्र लगा क्योंकि वह एक अच्छा पिता की भूमिका में है।

❖❖

5 सीमा–रेखा

(विष्णु प्रभाकर)

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. प्र० सं० 182 पर देखिए।
2. प्र० सं० 182-183 पर देखिए।
3. प्र० सं० 182-183 पर देखिए।
4. प्र० सं० 182-183 पर देखिए।
5. प्र० सं० 182 पर देखिए।
6. प्र० सं० 182-183 पर देखिए।
7. 'सीमा–रेखा' एकांकी की स्त्री–पात्रों में विशेष पात्र है सविता, वह एक जननेता के रूप में है। वह स्वस्थ जनतन्त्र का स्वरूप प्रस्तुत करती है। जनतन्त्र में, जनता और सरकार के बीच कोई विभाजक रेखा नही होती सविता के द्वारा यही प्रस्तुत किया गया है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. सीमा रेखा एकांकी में राष्ट्रीय चेतना को दिखाया गया है। लेखक का मत है कि जनतन्त्र के वास्तविक स्वरूप में दिन–प्रतिदिन विसंगतियाँ उत्पन्न हो रही हैं। इस समस्या को दर्शाते हुए विभिन्न घटनाओं के माध्यम से सिद्ध किया है कि जनतन्त्र में सरकार व जनता के बीच कोई विभाजक रेखा नहीं होती है, इसलिए सीमा–रेखा सार्थक शीर्षक है।
2. सीमा–रेखा में जनतन्त्र की सीमा–रेखा टूटती दिखाई देती है।
3. सीमा–रेखा एकांकी में देश की समस्या को प्रस्तुत किया गया है।
4. क्योंकि वह भीड़ को गुण्डे का राज नहीं समझता।
5. प्र0 न० 3 का उत्तर देखिए (लघु उत्त)
6. शरद चन्द्र अपने भाइयों की मृत्यु को देश–क्षति कहते हैं।
7. सीमा–रेखा एकांकी में सबसे अच्छा पात्र शरद चन्द्र का है, वह देश की सेवा में लगा रहता है।
8. एकांकी में सुभाष चन्द्र का बलिदान का उद्देश्य जनतन्त्र पर प्रहार करना है।

❖❖

व्याकरण–खण्ड

प्रकरण 1

काव्य–सौन्दर्य के तत्व

(रस, छन्द एवं अलंकार)

क 'रस'

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. प्र० 189 पर देखिए।
2. प्र० 189-190 पर देखिए।
3. प्र० 190 पर देखिए।
4. प्र० 190 पर देखिए।
5. (अ) वीर रस – उत्साह
   (ब) वियोग श्रंगार रस – रति
   (स) संयोग श्रंगार रस – रति
   (द) वीर रस – उत्साह
6. प्र० 189-190 पर देखिए।
7. प्र० 189-190 पर देखिए।
8. प्र० 189-190 पर देखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. प्र० सं० 189 पर देखिए।
2. प्र० सं० 189 पर देखिए।
3. प्र० सं० 189 पर देखिए।
4. प्र० सं० 189-190 पर देखिए।
5. प्र० सं० 189 पर देखिए।

'ख' छन्द

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. प्र० सं० 192 पर देखिए।
2. प्र० सं० 192 पर देखिए।
3. प्र० सं० 191 पर देखिए।
4. प्र० सं० 191-192 पर देखिए।
5. प्र० सं० 191-192 पर देखिए।
6. चौपाई छन्द लक्षण प्र० सं० 192 पर देखिए।
   दोहा छन्द लक्षण प्र० सं० 192 पर देखिए।
   दोहा छन्द लक्षण प्र० सं० 192 पर देखिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. दीर्घ मात्राओं से युक्त वर्ण गुरु माने जाते हैं।
2. वर्ण के उच्चारण में जो समय दीर्घ स्वर कहते हैं।
3. प्र० सं० 192 पर देखिए।
4. प्र० सं० 192 पर देखिए।
5. प्र० सं० 192 पर देखिए।
6. प्र० सं० 192 पर देखिए।
7. प्र० सं० 192 पर देखिए।
8. प्र० सं० 192 पर देखिए।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. दोहा छन्द मे प्रत्येक चरण में 26 मात्राएँ होती है।
2. चौपाई के चार चरण होते हैं।
3. वर्ण दो प्रकार के होते हैं – स्वर तथा व्यंजन
4. अनुस्वार युक्त वर्ण वे व्यंजन जो स्वर के बाद आते है।

'ग' अलंकार

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. प्र० सं० 193-194 पर देखिए।
2. प्र० सं० 193-194 पर देखिए।
3. प्र० सं० 194 पर देखिए।
4. प्र० सं० 194 पर देखिए।
5. प्र० सं० 194 पर देखिए।
6. (अ) अनुप्रास अलंकार लक्षण के लिए प्र० सं० 194 पर देखिए।
   (ब) यमक अलंकार लक्षण 194 प्र० सं0 पर देखिए।
   (स) प्र0 सं० 194 पर लक्षण देखिए श्लेष अलंकार है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. प्र० सं० 193 पर देखिए।
2. प्र० सं0 193-94 पर देखिए।
3. प्र० सं० 194 पर देखिए।
4. अनुप्रास अलंकार है।
5. प्र० सं० 194 पर देखिए।
6. 'र' वर्ण की आवृत्ति चार बार हुई है।
7. श्लेष अलंकार होता है।
8. प्र० सं० 194 पर देखिए।

❖❖

प्रकरण 2

हिन्दी व्याकरण तथा शब्द रचना

क-वर्तनी तथा विराम चिन्ह

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. प्र० सं0 196 पर देखिए।
2. योजन चिन्ह का प्रयोग दो या दो से अधिक शब्दों को जोड़ने के लिए किया जाता है। जैसे जीवन में सुख-दुख तो चलता रहता है।
3. प्र0 सं0 196-200 पर देखिए।
4. प्र० सं० 196-200 पर देखिए।

'ख' शब्द रचना : तत्सम, तदभव, विलोम, पर्यायवाची

छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं हल करें।

(ग) समास व मुहावरे

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. प्र0 सं० 203 पर देखिए।
2. प्र0 सं० 203-204 पर देखिए।
3. प्र0 सं० 203-205 पर देखिए।
4. तत्पुरुष समास
5. प्र० सं० 204-205 पर देखिए।

(घ) मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

छात्र अध्यापक की सहायता से स्वयं हल करें।

❖❖

प्रकरण

3

संस्कृत व्याकरण

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) सन्धि

1. प्र0 सं0 209 पर देखिए।
2. प्र0 सं0 209 पर देखिए।
3. प्र0 सं0 209 पर देखिए।
4. प्र0 सं0 209-210 पर देखिए।
5. प्र0 सं0 209-210 पर देखिए।

(ख) शब्द रुप

(ग) धातु-रुप

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. प्र0 सं॰ 211 पर देखिए।

		एकवचन	बहुवचन
2. बालक षष्ठी विभक्ति	–	बालकस्य	बालकानाम्
मुनि षष्ठी विभक्ति	–	मुनिस्य	मुनीनाम्
गुरु षष्ठी विभक्ति	–	गुरोः	गुरुणाम्

3. प्र0 सं0 211 पर देखिए।
4. प्र0 सं0 212 पर देखिए।
5. प्र0 सं0 212 पर देखिए।
6. प्र0 सं0 212 पर देखिए।

❖❖